



दी नैक्सट पोस्ट

साप्ताहिक

7 पिता-पुत्र का मिलन 5 परिसर में 40-50 बैसों बंधी थी 8 दिल्ली कैपिटल्स में कप्तानी भूल जाओ

UPHIN/2023/90814

वर्ष: 04, अंक: 09

पृष्ठ संख्या: 8

मूल्य: 1.00 रु.

सोमवार 24 अगस्त, 2026

400 टन से अधिक स्टॉक रखने पर होगी कार्रवाई

चीनी की कालाबाजारी पर योगी सरकार सख्त

योगी सरकार ने चीनी की कालाबाजारी जमाखोरी पर सख्ती बढ़ाई

व्यापारी 30 दिन से अप्रिक चीनी का भंडारण नहीं कर सकेंगे।

लखनऊ, संवाददाता। प्रदेश में चीनी की पर्याप्त उपलब्धता के बावजूद कालाबाजारी और जमाखोरी रोकने के लिए योगी सरकार ने सख्ती बढ़ा दी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चीनी की उपलब्धता और भंडारण की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिया कि कोई भी कारोबारी 30 दिन से अधिक चीनी का भंडारण न करे। उन्होंने कहा कि एक समय में 400 टन से अधिक स्टॉक रखने वाले डीलरों पर कार्रवाई के साथ एस्मा के तहत भी कड़ी कार्रवाई की जाएगी। प्रदेश में चीनी की 179.38 लाख क्विंटल उपलब्धता है। बता दें कि त्योहारी सीजन से पहले देश में चीनी की कीमतें बेलगाम हो गई हैं। पिछले एक महीने में चीनी की कीमत खुदरा बाजार में 48.18 रुपये से बढ़कर 65 रुपये प्रति किलो तक पहुंच गई है। यानी एक किलो पर लगभग 17 रुपये की बढ़ोतरी। यही नहीं, खुदरा बाजार में कुछ जगहों पर तो यह अभी 70 रुपये प्रति किलो के भाव से बिक रही है। इससे चिंतित सरकार कीमतों पर नियंत्रण के लिए तीन स्तरों पर काम कर रही है। बाजार में आपूर्ति बढ़ाने के लिए आयात का सहारा लिया जा रहा है, तो जमाखोरी

चीनी की कीमतों में उबाल



योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश में चीनी की कालाबाजारी और जमाखोरी रोकने के लिए सख्त कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने व्यापारियों को 30 दिन से अधिक चीनी का भंडारण न करने और 400 टन से अधिक स्टॉक रखने पर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

रोकने के लिए स्टॉक सीमा लगाने के साथ निगरानी बढ़ा दी गई है। उत्पादन बढ़ाने को गन्ना सत्र में जल्द पेराई शुरू करने का प्रयास भी किया जा रहा है। मकसद है कि नई फसल आने तक बाजार में पर्याप्त चीनी उपलब्ध रहे और कीमतों पर दबाव कम हो। इसके साथ ही केंद्र सरकार ने चीनी मूल्य में तेजी के लिए एथनाल नीति को जिम्मेदार मानने से इन्कार किया है। यह भी कहा है कि अक्टूबर में पेराई शुरू

होने तक घरेलू मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त स्टॉक है। हालांकि, कीमतों में तेज वृद्धि स्टॉक में कमी की ओर इशारा करती है। सरकार ने जमाखोरी रोकने के लिए 30 नवंबर तक कारोबारियों के लिए 400 टन की स्टॉक सीमा लागू की गई है। एक सितंबर से थोक उपभोक्ता भी अपनी 15 दिन की खपत से अधिक का स्टॉक नहीं रख सकेंगे। जमाखोरी रोकने के लिए

केंद्र और राज्यों की संयुक्त टीमों चीनी मिलों में स्टॉक का भौतिक सत्यापन करेंगी। बाजार में तत्काल आपूर्ति बढ़ाने के लिए 10 लाख टन चीनी का शुल्क-मुक्त आयात किया जाएगा। अगस्त से नवंबर के बीच गणेश चतुर्थी, दशहरा और दिवाली जैसे त्योहारों के कारण मांग बढ़ती है। दूसरी ओर नई पेराई अक्टूबर में शुरू होगी। ऐसे में अगले डेढ़-दो महीने बाजार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

आईफोन की जिद ने उजाड़ दिया परिवार

मां के लिए जी लो ना'

सरपंच ने युवक से भावुक अपील करते हुए कहा, 'आई, मैं गांव का सरपंच हूं। चल! जो चाहिए वो लाकर देंगे।'

मुम्बई, एजेंसी। छत्रपति संभाजीनगर में आईफोन को लेकर माता-पिता से हुए विवाद के बाद 19 वर्षीय युवक ने खवाड्या पहाड़ी से छलांग लगा दी। उसे बचाने की कोशिश में पिता भी नीचे गिर गए, जबकि पति और बेटे को गिरते देख मां ने भी पहाड़ी से छलांग लगा दी। इस दर्दनाक घटना में तीनों की मौत हो गई। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर के तिसगांव इलाके में शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे 19 वर्षीय युवक अपने माता-पिता से मोबाइल फोन को लेकर हुए विवाद के बाद खवाड्या पहाड़ी पर पहुंच गया। उसके पीछे उसके माता-पिता भी वहां पहुंच गए। युवक को समझाकर वापस लाने के लिए पुलिस, दमकल कर्मी, ग्रामीण और गांव के सरपंच समेत कई लोग मौके पर पहुंचे। करीब तीन घंटे तक सभी लोग युवक को समझाने और उसे पहाड़ी के किनारे से पीछे हटाने की कोशिश करते रहे। गांव के सरपंच ने उसे कई तरह के भरोसे दिए और कहा कि उसकी जो भी इच्छा है, उसे पूरा किया जाएगा।

गोरखा मुद्दे के स्थायी समाधान के लिए बनी गृह मंत्रालय की कमेटी



दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, गोरखा नेताओं और पश्चिम बंगाल सरकार के बीच हुई एक अहम बैठक के बाद केंद्र सरकार ने गोरखा मुद्दे पर अंतिम समझौते का मसौदा तैयार करने के लिए एक समिति का गठन किया है। बैठक में विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों ने अपनी चिंताओं, मांगों और उम्मीदों को सामने रखा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी में गोरखा नेताओं, पश्चिम बंगाल सरकार और अन्य हितधारकों की बैठक के बाद गोरखा मुद्दे के स्थायी राजनीतिक समाधान की दिशा में अहम पहल सामने आई है। भाजपा सांसद राजू बिस्टा के अनुसार, गृह मंत्रालय ने मध्यस्थ पंकज कुमार सिंह के नेतृत्व में एक समिति गठित की है, जो बैठक में बनी सहमति के आधार पर अंतिम समझौते का मसौदा तैयार करेगी। यह पहल 1988 के गोरखा समझौते की वर्षगांठ के दिन हुई बैठक के कारण भी राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

स्थायी समाधान के लिए समिति का गठन

शाह के उत्तर बंगाल दौरे के तीसरे और आखिरी दिन दार्जिलिंग की तलहटी में स्थित सुकना के एक होटल में यह अहम बैठक हुई। इसमें पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी, पहाड़ी इलाकों की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेता और क्षेत्र से जुड़े अन्य हितधारक शामिल हुए। बिस्टा ने कहा कि मध्यस्थ पंकज कुमार सिंह के नेतृत्व में गृह मंत्रालय के तहत एक समिति का गठन किया गया है। यह समिति आज हुए समझौते के मसौदे को अंतिम रूप देने का काम करेगी।

गोरखपुर में रनवे से टकराया विमान का पिछला हिस्सा

5.5 घंटे फंसे रहे यात्री, मंगाना पड़ा दूसरा प्लेन

गोरखपुर एयरपोर्ट पर इंडिगो विमान में टेल इम्पैक्ट मिला दिल्ली जाने वाली उड़ान 5 घंटे 30 मिनट विलंबित हुई यात्रियों के लिए वैकल्पिक विमान और सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं



गोरखपुर एयरपोर्ट पर इंडिगो के एक विमान में टेल इम्पैक्ट पाए जाने के बाद उसे ग्राउंड कर दिया गया। इसके चलते 19 अगस्त को गोरखपुर से दिल्ली जाने वाली उड़ान 5 घंटे 30 मिनट विलंबित हुई और यात्रियों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की गई।

गोरखपुर, संवाददाता। गोरखपुर एयरपोर्ट पर इंडिगो के विमान में टेल इम्पैक्ट मिलने के बाद उसे ग्राउंड कर दिया गया। इसके चलते 19 अगस्त को गोरखपुर से दिल्ली जाने वाली इंडिगो की अगली उड़ान करीब पांच घंटे 30 मिनट विलंबित हुई। तकनीकी जांच के बाद विमान का संचालन रोक दिया गया और यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए एयरलाइंस ने वैकल्पिक विमान की व्यवस्था की। एयरपोर्ट निदेशक संजय कुमार के अनुसार, 19 अगस्त को इंडिगो की उड़ान संख्या 6ई 2381 दिल्ली से गोरखपुर पहुंची थी। विमान के एयरपोर्ट पहुंचने के बाद एयरलाइंस ने विमान वीटी-आईएलआर में तकनीकी कारणों से टेल इम्पैक्ट पाए जाने की सूचना दी। इसके बाद विमान को आगे के परिचालन से हटा दिया गया। गोरखपुर से दिल्ली के लिए अगली उड़ान 6ई 5013 का संचालन होना था। विमान ग्राउंड होने के कारण निर्धारित समय पर उड़ान नहीं भर

सकी। इससे यात्रियों को करीब 5 घंटे 30 मिनट तक इंतजार करना पड़ा। स्थिति को देखते हुए इंडिगो ने वैकल्पिक विमान वीटी-आईबीसी की व्यवस्था की। इसके बाद यात्रियों को दिल्ली भेजने की प्रक्रिया पूरी की गई। इंतजार के दौरान यात्रियों की सुविधा के लिए एयरलाइंस की ओर से स्नैक्स और भोजन उपलब्ध कराया गया। यात्रियों को उनकी सुविधा के अनुसार वैकल्पिक यात्रा विकल्प भी दिए गए। जो यात्री यात्रा जारी नहीं रखना चाहते थे, उन्हें नियमानुसार पूर्ण रिफंड का विकल्प उपलब्ध कराया गया।

19 अगस्त की घटना का असर एयरपोर्ट के नियमित परिचालन पर स्थायी रूप से नहीं पड़ा। एयरपोर्ट से संचालित अन्य सभी उड़ानों का परिचालन सामान्य और सुचारु रहा। तकनीकी समस्या केवल एक विमान तक सीमित रही और वैकल्पिक विमान की व्यवस्था कर यात्रियों की यात्रा पूरी कराई गई।

— संजय कुमार, एयरपोर्ट निदेशक

बाबा रामदेव का आंदोलन करना जरूरी है, क्योंकि वो स्वदेशी से शुरू हुए थे और अब नकली चट्टी तक पहुंच गए। बस इस बार सलवार पहनकर ना भागें

बृजभूषण शरण सिंह बीजेपी नेता



गूगल अपने डिवाइसेस के प्रोडक्शन का बड़ा हिस्सा चीन से भारत शिफ्ट कर सकता है

अश्विनी वैष्णव केंद्रीय मंत्री



जब देश के गृह मंत्री ने सार्वजनिक तौर पर बयान दिया कि वे चर्चा के लिए तैयार हैं लेकिन क्या राहुल गांधी ने आकर चर्चा की? तो भागा कौन?

स्मृति ईरानी भाजपा नेता



अयोध्या में रिश्तत दीजिए रामलला के दर्शन कीजिए

चार्ज

7300 रुपए

जबकि, राममंदिर में दर्शन के लिए कोई शुल्क नहीं है।

'राममंदिर में दर्शन हो जाएंगे। मजिस्ट्रेट साहब के यहां से प्रोटोकॉल जारी करा देंगे, फिर दरोगा खुद ले जाएगा और दर्शन कराएगा।'

सम्पादकीय

चीनी के बढ़ते मूल्यों पर सरकार ने खराब मौसम और अंतरराष्ट्रीय दामों को जिम्मेदार ठहराया है, जबकि विपक्ष एथनॉल नीति को कारण बता रहा है

चीनी के बढ़ते मूल्य

दो महीनों में चीनी के दाम 40 फीसद बढ़े
सरकार ने खराब मौसम, कम उत्पादन को कारण बताया
एथनाल नीति के प्रभावों पर पुनर्विचार की आवश्यकता

चीनी के बढ़ते मूल्यों का संज्ञान लिया जाना आवश्यक था, लेकिन अच्छा होता कि सरकार तभी चेत जाती, जब चीनी के दाम बढ़ने शुरू हुए थे। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि बीते दो महीनों में चीनी के मूल्य लगभग 40 प्रतिशत बढ़ गए हैं। सरकार ने इसका कारण खराब मौसम की वजह से गन्ने की फसल को नुकसान और उसके चलते चीनी के घरेलू उत्पादन में कमी, अंतरराष्ट्रीय बाजार में चीनी के दामों में वृद्धि आदि को बताते हुए इससे स्पष्ट रूप से इन्कार किया है कि पेट्रोल में एथनाल की मिलावट से ऐसा हुआ है।

उसके अनुसार एथनॉल के लिए इस्तेमाल होने वाली चीनी का हिस्सा घटा है। उसने यह भी साफ किया कि देश में उत्पादित होने वाले एथनाल का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा अनाज और खास तौर पर मक्के से आता है। इस सबके बाद भी उसे यह आभास होना चाहिए था कि त्योहारों को देखते हुए चीनी की मांग बढ़ेगी और जमाखोरी करने वाले इसका लाभ उठा सकते हैं। ध्यान रहे कि एक बार जब किसी आवश्यक वस्तु के दाम बढ़ने लगते हैं तो उन्हें यकायक रोकना संभव नहीं होता।

देखना है कि सरकार ने चीनी के बढ़ते दामों पर लगाम लगाने के लिए दस लाख टन चीनी का आयात करने, डीलरों के लिए भंडारण सीमा तय करने और जमाखोरों के खिलाफ कार्रवाई करने के जो कदम उठाए हैं, उनके अपेक्षित परिणाम मिल पाते हैं या नहीं? हालांकि सरकार ने यह स्पष्ट किया कि चीनी के मूल्य बढ़ने का कारण एथनाल नीति नहीं है, लेकिन विपक्षी राजनीतिक दल यही साबित करने में जुट गए हैं। उन्हें यह मौका इसलिए भी मिला, क्योंकि खुद सरकार ने यह माना कि एथनाल मिश्रित पेट्रोल से वाहनों के माइलेज में कमी आती है। सरकार ने जिस तरह यह रेखांकित किया कि एथनाल नीति से चीनी उद्योग को लाभ मिला है और चीनी मिलों की आर्थिक स्थिति सुधरने के साथ गन्ना किसानों को भुगतान की समस्या का समाधान करने में आसानी हुई है, उससे ऐसा लगता है कि वह अपनी इस नीति पर पुनर्विचार नहीं करने वाली।

यदि यह मान लिया जाए कि एथनाल नीति चीनी के मूल्य बढ़ने का कारण नहीं है तो भी इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि ई-20 ईंधन विवाद का मुद्दा बन गया है। यह सही है कि एथनाल नीति से पेट्रोलियम पदार्थों के आयात में खपने वाली विदेशी मुद्रा बचाने में सफलता मिली है, लेकिन यह सही समय है कि इस नीति पर नए सिरे से विचार किया जाए और यह देखा जाए कि विदेशी मुद्रा की जो बचत हो रही है, वह कुल मिलाकर कितनी प्रभावी सिद्ध हो रही है। यह भी देखना होगा कि एथनाल नीति खाद्य सुरक्षा के लिए कोई संकट तो पैदा नहीं करने वाली। इसका आकलन भी किया जाना चाहिए कि क्या ई-20 ईंधन पर्यावरण की रक्षा में सहायक बन पा रहा है?

भीड़तंत्र का पर्याय न बने लोकतंत्र

दिल्ली के जंतर-मंतर पर कौंकरोच छात्र-युवाओं के धरने पर जिन दलों, नेताओं, बड़े लोगों ने खुल कर या चुपचाप समर्थन-सहयोग दिया था, वे रांची के मुंडा स्ट्रेडियम में नदारद रहे। अथवा कहें कि एक जगह पीठ पर एक तरह के दल थे, तो दूसरी जगह दूसरे खेमे के। जबकि दोनों स्थानों पर मुद्दा शैक्षिक परीक्षाओं में गड़बड़ी के विरुद्ध था। यह तुलनात्मक दृश्य क्या दिखाता है? यही कि युवा शक्ति अथवा आज के मुहावरे में रोजेन-जोश के बारे में एकतरफा बातों को विवेक पर तौलना बेहतर है। हर युग में युवाओं में अधिक ऊर्जा, आदर्श और न्यायप्रियता रहती है। इसलिए कभी-कभी बार-बार होती गड़बड़ी या अनुचित परिघटना पर उनमें उद्वेलन श्रुवा आंदोलनश का रूप लेता है। प्रायः ऐसा तभी होता है, जब स्थापित राजनीतिक दल में अच्छे नेताओं का अभाव हो। तब कोई घटना अनायास किन्हीं युवाओं को परिदृश्य में ला देती है। जैसा हाल में मुख्य न्यायाधीश द्वारा एक विशेष संदर्भ में श्काकरोचश कह देने से हुआ। यदि देश के कोई नेता वैसी संज्ञा का प्रतिवाद करते, तो संभवतः काकरोच जनता पार्टी जैसी व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया को वैसा अप्रत्याशित समर्थन नहीं मिलता। इस तरह देखा जाए तो काकरोच आंदोलन का उद्भव हमारे राजनीतिक दलों की सामूहिक उदासीनता का भी परिणाम था।

राष्ट्रीय राजनीति में जनता पार्टी से लेकर असम में आसू और आम आदमी पार्टी के उदाहरणों में देखा गया कि छात्र-युवा अंततः पेशेवर नेताओं द्वारा ही मुख्य रूप से इस्तेमाल होते हैं। काम निकल जाने और सत्ता पा लेने के बाद नेता बड़े-बड़े बौद्धिकों, विधिवेत्ताओं आदि को दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल फेंक देते हैं। इसलिए राजनीति में दूरदृष्टि, दृढ़ता और विवेकशीलता का स्थायी महत्व है। किसी भी आंदोलन में यदि प्रभावी नेता विवेकशील न हों तो उसके गलत दिशा में जाने की भरी-पूरी आशंका रहती है। हालांकि दृढ़ता, समर्पण, संसाधन-कुशलता आदि गुण किसी मतांध, कट्टरपंथी में भी हो सकते हैं। अतः भीड़ देखकर उत्साहित होने में सावधानी रखनी चाहिए, क्योंकि वह विचारहीन होती है।

उसे सदैव कोई और इस्तेमाल करता है। एक बार भीड़ में कोई उलटी-सीधी बात भर दी जाए तो वह अपने बीच के व्यक्तियों को भी नियंत्रण में ले लेती है। यह अधिकांश भीड़ आंदोलनों में देखा गया है। जेपी आंदोलन से लेकर काकरोच पार्टी के संसद मार्च तक यही हुआ है। कुल मिलाकर मामला न सीधा है और न एकतरफा। यही राजनीति की जटिलता है। इसमें जितना सामने रहता है, उससे अधिक छिपा रहता है। उन छिपी बातों, उद्देश्यों में अधिकांश अनुपयुक्त होती हैं। इसीलिए छिपाई जाती हैं, लेकिन भोले छात्र युवा ही नहीं, आम लोग भी उससे अनजान रहते हैं। इसीलिए लोकतंत्र में विशेषतः लोगों को लुभाने, भड़काने, बड़ी-बड़ी बातें करने, सपने दिखाने का प्रचलन है। किसी भी तरह अधिक लोगों को अपनी ओर खींचना ही आम नेताओं का उद्देश्य होता है। यह काम भीड़ की मानसिकता को उकसा कर अधिक सरलता से होता है। इसीलिए नेताओं की बिरादरी भीड़ की चापलूसी करती है। बात-बात में

श्जनताश् का गुणगान उसका सबसे सामान्य रूप है। जबकि कहीं भी जनता कोई नीति नहीं बनाती। उसके नाम पर अच्छे या बुरे नेता ही यह करते हैं। यह अकाट्य तथ्य है कि कोई भी भीड़ प्रेरित आंदोलन अपने घोषित आदर्श वाला लक्ष्य नहीं प्राप्त करता। उसके बल से केवल सत्ता में उलटफेर होता है। नई सत्ता अच्छी नीति बनाए या पहले से भी बुरा हाल कर दे, यह मात्र नए नेताओं के विवेक और योग्यता पर निर्भर रहता है। यह रुझान पचास वर्षों के भारतीय अनुभव से प्रमाणित है। जेपी का छात्र आंदोलन और आल असम छात्र यूनियन आदि ने अंततः सत्ता में उलटफेर तो किया, किंतु उनके घोषित लक्ष्य श्रष्टाचार का खात्माश् या श्विदेशी घुसपैठ रोकनाश् आकाश-कुसुम ही रहे। इतना ही नहीं, स्थिति पहले से और बुरी होती गई। केवल भीड़, नारे और आवेश से आशा रखना फिजूल है। राजनीति में शार्टकट से कोई नीतिगत उपलब्धि असंभव है। नेताओं, दलों के बदले मुद्दों पर शांतिपूर्वक विचार करने पर ही वैसी उपलब्धि का मार्ग मिल सकता है। हालांकि वह धैर्य और सामाजिक चेतना की मांग करता है, जबकि पेशेवर नेता अपनी दलीय चेतना से लाभ की फिराक में रहते हैं। अतः आकस्मिक आंदोलनों में भी वे खुले-छिपे मौका तलाशते हैं कि उसका अपने स्वार्थ में उपयोग करें। यही कारण है कि बड़े-बड़े आंदोलन भी अपना घोषित लक्ष्य पाने में विफल रहते हैं।

उसकी शुरुआत किसी उचित समस्या से तो होती है, परंतु उसका वैज्ञानिक समाधान केवल सामाजिक भावना से मिल सकता है, जबकि दलीय प्रतिद्वंद्विता उसे अनिवार्यतः इधर या उधर खींचती है। तदनुरूप समस्या पर समुचित विचार और सही समाधान पर सहमति बनाने के बदले दलीय धड़ों द्वारा एक-दूसरे को गिराने की प्रवृत्ति ऊपर हो जाती है। लोगों को लपफाजी से आसान रास्ता दिखाया जाता है। इस तरह सत्ता परिवर्तन तो हो जाता है, लेकिन समस्या यथावत बनी रहती है। किसी भी आंदोलन में नारों से शायद ही कुछ तय होता है। उलटे भीड़ को शक्ति देना, उसके समक्ष झुकना एक तरह से बड़े संकट को न्योता देने जैसा हो सकता है। जनता के नाम पर मुद्दी भर शातिर लोग आम लोगों का इस्तेमाल करते हैं।

किसी भी आंदोलन की सरसरी चापलूसी या आदतन भर्त्सना अनुपयुक्त है। राजनीति में सब कुछ निर्णयकारी व्यक्तियों पर निर्भर होता है। यदि निर्णायक स्थान पर विवेकशील और कटिबद्ध व्यक्ति हों तभी सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं। अन्यथा तमाम हंगामे और उथल-पुथल के बाद भी हालात वही ढाक के तीन पात वाले रहते हैं। यही राजनीति के प्रति सदियों से महान ज्ञानियों की सीख है। यही दुनिया भर के आधुनिक अनुभव भी हैं। इसलिए हमें भीड़तंत्र और लोकतंत्र की बारीक रेखा का सदैव ध्यान रखना होगा। राष्ट्रजीवन के किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में लोकहित की राजनीति कहीं अधिक पात्रता एवं विशेषज्ञता की मांग करती है। इसकी जितनी उपेक्षा होती है, उस हद तक समाज की हानि होती रहती है।

बार-बार चेतावनी देता हिमालय

हिमालय की दुर्गमता को वरदान में बदलने के लिए उसका सीना छलनी कर सड़कें, रेल लाइनें, बिजलीघर और सुरंगें बनाई जा रही हैं। यह सब आवश्यक ही लगता है, लेकिन जब हम प्रकृति के साथ अंधाधुंध छेड़छाड़ के तात्कालिक और दूरगामी परिणामों की कल्पना करते हैं तो सिहरन होती है। 2023 में 17 दिनों तक दुनिया की सांसें रोकने वाले सिलक्यारा सुरंग हादसे वाली जगह पर इसी साल फिर कंक्रीट गिरने से एक मजदूर की मौत हो गई। इस हादसे पर बहस चल ही रही थी कि 20 जुलाई को सिक्किम के तीस्ता स्टेज-6 परियोजना की सुरंग में मीथेन गैस के विस्फोट और सुरंग का एक हिस्सा ढहने से 25 मजदूरों की मौत हो गई। इस भयंकर हादसे की गूंज अभी थमी भी नहीं थी कि उत्तराखंड के चमोली जिले में विष्णुगाड-पीपलकोटी जलविद्युत परियोजना की सुरंग में फिर बड़ा हादसा हो गया, जिसमें आठ श्रमिकों की मौत हो गई। इस हादसे का तात्कालिक कारण अचानक सुरंग के एक हिस्से का ढहना तथा उससे निकले मलबायुक्त पानी का सैलाब था। हिमालयी क्षेत्र में सिलसिलेवार हादसे मानव जीवन के प्रति प्रशासनिक और निर्माण एजेंसियों की उपेक्षा की ओर इशारा तो करते ही हैं, साथ ही हिमालय के भूगर्भ की अनदेखी और पर्वतों में सुरंग इंजीनियरिंग की कामयाबी पर भी प्रश्नचिह्न खड़े करते हैं। ताजा हादसा किसी एक परियोजना या निर्माण स्थल की विफलता भर नहीं है। इसके पीछे संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र में तेजी से हो रहे अवसंरचनात्मक निर्माणों और वहां की जटिल भूगर्भीय परिस्थितियों के बीच बढ़ता तनाव दिखाई देता है। सवाल यह है कि क्या हम हिमालय की प्रकृति को समझकर सुरंग बना रहे हैं या केवल अपनी विकास योजनाओं की समयसीमा पूरी करने के लिए पहाड़ को उसकी मूल संरचना के विरुद्ध धकेल रहे हैं? बार-बार हादसों का दोहराया जाना साबित करता है कि हमने अतीत से कोई सबक नहीं सीखा। किसी भी निर्माण स्थल पर होने वाली छोटी विफलताएं दरअसल भविष्य के बड़े हादसों की पूर्व चेतावनियां होती हैं। यदि इन चेतावनियों को सुरक्षा व्यवस्था सुधारने का अवसर न बनाया जाए, तो दुर्घटनाएं केवल समय का

इंतजार करती हैं।

भूगर्भ विज्ञान के दृष्टिकोण से हिमालय में सुरंग का निर्माण कोई साधारण मैदानी इंजीनियरिंग का काम नहीं है। हिमालय दुनिया की सबसे युवा पर्वत प्रणालियों में से एक है और भूगर्भीय रूप से आज भी निरंतर गतिमान है। यहां की चट्टानें अनेक स्थानों पर टूटी-फूटी और दरारों से भरी हैं। क्या विष्णुगाड-पीपलकोटी परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने वालों को यह प्राथमिक ज्ञान नहीं था कि हिमालय पर बर्फ के रूप में जो पानी जमा है, वह रिस-रिसकर पहाड़ के भीतर एक संपूर्ण और विशाल भूजलतंत्र बनाता है? कुछ वर्ष पहले इसी क्षेत्र में स्थित तपोवन-विष्णुगाड जलविद्युत परियोजना की सुरंग में हुआ भारी जल-स्त्राव भी गंभीर चिंता का कारण बना था। ऐसा भूगर्भिक जल-स्त्राव एक अप्रत्याशित खतरा भर नहीं, बल्कि यह क्षेत्र के पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को पहुंचाया जाने वाला एक बड़ा स्थायी नुकसान है।

जब सुरंगों के कारण सदियों पुराना आंतरिक भूजलतंत्र छिन्न-भिन्न हो जाता है, तो बहुत बड़े भूभाग को गंभीर जल-संकट से जूझना पड़ता है। पीपलकोटी हादसे की मानवीय-आर्थिक क्षतियों का आकलन तो होगा ही, पर दूरगामी पर्यावरणीय क्षति की भरपाई कोई नहीं कर पाएगा। पहाड़ के ऊपर दिखाई देने वाली जमीन और उसके भीतर की भूगर्भीय संरचना को एक जैसा समझना आधुनिक इंजीनियरिंग की भूल है। सुरंग के सामने दिखाई देने वाली चट्टान कुछ मीटर आगे वैसी नहीं रहती। भूमिगत जल अपना रास्ता बदल सकता है और चट्टान की मजबूती अचानक कम हो सकती है। सुरंग का नक्शा केवल निर्माण शुरू होने से पहले तैयार नहीं होता, बल्कि खोदाई के दौरान सामने आने वाली वास्तविक भूगर्भीय परिस्थितियों के अनुसार उसमें लगातार बदलाव करना पड़ता है। सुरंग निर्माण में कमजोर चट्टान मिलने पर केवल कंक्रीट की परत चढ़ा देना पर्याप्त नहीं। खतरे का संकेत मिलने पर काम रोकना किसी परियोजना की विफलता नहीं, बल्कि कुशल इंजीनियरिंग का प्रमाण है।

कैसे लौटेगा भरोसा

भारत में प्रतियोगी परीक्षाएं केवल प्रश्नों और उत्तरों का मूल्यांकन नहीं हैं। इनके पीछे लाखों विद्यार्थियों की वर्षों की मेहनत, समय, धन, पारिवारिक उम्मीदें और भविष्य की योजनाएं जुड़ी होती हैं। इसलिए जब किसी राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में प्रश्नपत्र की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठते हैं और परीक्षा दोबारा कराने की नौबत आती है, तो इसे केवल एक प्रशासनिक भूल मानकर आगे बढ़ जाना उचित नहीं है। यह पूरे परीक्षा तंत्र की विश्वसनीयता और जवाबदेही का प्रश्न बन जाता है। यूजीसी-नेट जून 2026 की अंग्रेजी, वाणिज्य और समाजशास्त्र विषयों की परीक्षा को दोबारा कराने का निर्णय इसी चिंता को सामने लाता है। इन तीन विषयों के प्रश्नपत्रों को लेकर बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों ने शिकायतें की थीं। जांच के बाद प्रश्नपत्रों में तथ्यात्मक त्रुटियां, मुद्रण संबंधी गलतियां, अनुवाद की समस्याएं, व्याकरण संबंधी कमियां, विद्वानों और पुस्तकों के नामों में गलतियां तथा पहले पूछे जा चुके प्रश्नों की पुनरावृत्ति जैसी समस्याएं सामने आईं। इन कमियों के कारण संबंधित विषयों की परीक्षा दोबारा कराने का निर्णय लिया गया। यह निर्णय तत्काल दृष्टि से उचित है, क्योंकि त्रुटिपूर्ण प्रश्नपत्र के आधार पर परिणाम घोषित करना विद्यार्थियों के साथ अन्याय होता। लेकिन असली सवाल इससे आगे का है- आखिर इतने महत्वपूर्ण प्रश्नपत्र में ऐसी गलतियां पहुंचीं कैसे? हाल के समाचारों और उपलब्ध जानकारी में नीट-यूजी प्रश्नपत्र विवाद के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय की सख्ती तथा राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी की परीक्षा व्यवस्था को और मजबूत, सुरक्षित एवं पारदर्शी बनाने की आवश्यकता पर भी सवाल उठे हैं। यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि देश में लाखों युवाओं के भविष्य से जुड़ी परीक्षाओं के संचालन के लिए क्या वर्तमान व्यवस्था पर्याप्त रूप से मजबूत और जवाबदेह है? अक्सर परीक्षा सुधार की चर्चा होते ही प्रश्नपत्र लीक रोकने, परीक्षा केंद्रों पर निगरानी बढ़ाने, प्रश्नपत्रों के सुरक्षित परिवहन और कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की बात की जाती है। ये सभी उपाय आवश्यक हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न अक्सर पीछे छूट जाता है- क्या प्रश्नपत्र स्वयं शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण है? यदि किसी प्रश्न में किसी विद्वान का नाम गलत लिखा हो, किसी पुस्तक का शीर्षक गलत हो, किसी तथ्य में त्रुटि हो, अनुवाद प्रश्न का अर्थ बदल दे या व्याकरण संबंधी गलती के कारण प्रश्न अस्पष्ट हो जाए, तो विद्यार्थी की योग्यता का निष्पक्ष मूल्यांकन कैसे होगा? इसलिए परीक्षा की विश्वसनीयता के दो महत्वपूर्ण आधार हैं- प्रश्नपत्र की सुरक्षा और प्रश्नपत्र की शैक्षणिक गुणवत्ता। प्रश्नपत्र परीक्षा केंद्र से बाहर न जाए, यह जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी यह भी है कि परीक्षा केंद्र तक पहुंचने वाला प्रश्नपत्र तथ्यात्मक रूप से सही, भाषा की दृष्टि से स्पष्ट, पाठ्यक्रम के अनुरूप और संतुलित हो।

वे भी अपना—अपना स्टॉक और अन्य रिकॉर्ड दुरुस्त करने में जुट गए। आशंका जताई जा रही है कि हार्बर्ट आगे भी जारी रह सकती है और अन्य व्यापारी भी इसकी जद में आ सकते हैं। छापे के तार रेले और अल्हागंज से भी जोड़े जा रहे हैं। वहीं, व्यापारी मनीष जैन ने बताया कि हार्बर्ट बांध के पास स्थित उनके गोदाम में जीएसटी की टीम आई थी। उन्हें दस्तावेज और अन्य कागजात दिखा दिए गए। टीम ने व्यापार स्थल की जांच की और इसके बाद रवाना हो गई।

गोरखपुर ने बनाया रिकार्ड , देश के 28 बड़े स्टेशनों में सिर्फ जंक्शन पास-बाकी फेल

गोरखपुर। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट 12 अगस्त 2026 को संसद (लोकसभा और राज्यसभा) में पेश की गई है। यह रिपोर्ट वित्तीय वर्ष 2019–20 से 2023–24 (5 वर्ष की अवधि) के दौरान फंड के आवंटन, उपयोग और यात्री सुविधाओं के अनुपालन से संबंधित है। रिपोर्ट में यह बताया गया है कि रेल मंत्रालय ने रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं के लिए जो नियम बनाए थे, विभिन्न जोन उनका पालन करने में नाकाम रहे। गोरखपुर जंक्शन ने देशभर के रेलवे स्टेशनों में अपनी अलग पहचान बनाई है। 18 सप्ताह में 28 बड़े स्टेशनों (एनएसजी-1 श्रेणी) में गोरखपुर जंक्शन ही इकलौता स्टेशन है, जहां यात्रियों से जुड़ी सुविधाएं बेहतर मिली हैं। यह रिपोर्ट भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की है, जिसमें शुद्ध पानी, वेंटिंग हाल, सीटिंग प्लान, शौचालय सहित 12 बिंदुओं पर हुई रैंडम जांच में सब कुछ बेहतर पाया गया है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट 12 अगस्त 2026 को संसद (लोकसभा और राज्यसभा) में पेश की गई है। यह रिपोर्ट वित्तीय वर्ष 2019–20 से 2023–24 (5

वर्ष की अवधि) के दौरान फंड के आवंटन, उपयोग और यात्री सुविधाओं के अनुपालन से संबंधित है। रिपोर्ट में यह बताया गया है कि रेल मंत्रालय ने रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं के लिए जो नियम बनाए थे, विभिन्न जोन उनका पालन करने में नाकाम रहे। एनएसजी-1 स्टेशनों की ऑडिट रिपोर्ट में गोरखपुर जंक्शन को छोड़ कर अन्य स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं में कमी सामने आई। इसमें पेयजल (12 स्टेशन), पंखे और वाटर कूलर (आठ स्टेशन) और संकेतक (पांच स्टेशन) में कमी शामिल है। गोरखपुर जंक्शन पर पानी के अलावा प्रतीक्षा कक्ष, प्लेटफॉर्म शेल्टर, उच्च स्तरीय प्लेटफॉर्म आदि की व्यवस्था में कोई कमी नहीं पाई गई। कैग की रिपोर्ट में एनएसजी-1 श्रेणी में गोरखपुर जंक्शन और अन्य श्रेणियों में आठ स्टेशनों पर लिए गए सैंपल में खामियां नहीं मिली है, यह बड़ी उपलब्धि है। जिन स्टेशनों पर गड़बड़ी मिली है वहां रेलवे बोर्ड के मानक अनुसार सुधार किया जाएगा और कैग की रिपोर्ट में दिए गए सुझाव का अनुपालन सुनिश्चित कराया जाएगा सुमित कुमार, सीपीआरओ-एनईआर

, एनएसजी-1 स्टेशन के बारे में एनएसजी-1 श्रेणी भारतीय रेलवे स्टेशनों का सबसे उच्च और महत्वपूर्ण वर्गीकरण है। यह 500 करोड़ रुपये से अधिक की सालाना कमाई और दो करोड़ से ज्यादा यात्रियों के आवागमन वाले बड़े स्टेशनों को दिया जाता है। एनईआर के आठ स्टेशनों पर नहीं मिली खामियां कैग की रिपोर्ट में पूर्वोत्तर रेलवे से कुल 32 स्टेशनों से रैंडम सैंपल लिए गए। इनमें आठ स्टेशनों पर मानक के अनुसार सुविधाएं मिली हैं। ये स्टेशन गोरखपुर जंक्शन, बनारस, सारनाथ, दुल्लहपुर, मथुरा कैंट, सारनाथ, नकहा जंगल, रोशनपुर हैं। जबकि, 24 स्टेशनों पर खामियां मिली। कहीं पंखा कम थे तो कहीं बैठने के सीटिंग प्लान बेहतर नहीं था। कुछ स्टेशन ऐसे पाए गए हैं जहां शेल्टर शेड कम है और शौचालय की सफाई बेहतर नहीं है। इन बिंदुओं की जांच पर आई कैग की रिपोर्ट पीने का पानी, वेंटिंग हॉल, बैठने की व्यवस्था, प्लेटफॉर्म शेल्टर, यूरिनल, शौचालय, ऊंचे प्लेटफॉर्म, पंखे, फुट ओवरब्रिज (एफओबी), कूड़ेदान, घड़ियां और पब्लिक एड्रेस सिस्टम।

देश में एनएसजी-1 स्टेशनों की संख्या गोरखपुर जंक्शन, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल, हावड़ा, सियालदह, मुंबई सेंट्रल, विजयवाड़ा जंक्शन, जयपुर जंक्शन, नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन, लोकमान्य तिलक टर्मिनस, दादर सेंट्रल, कल्याण, ठाणे, पनवेल, पुणे जंक्शन, हावड़ा जंक्शन, सियालदह जंक्शन, एमजीआर चेन्नई सेंट्रल, चेन्नई एमोर, तांबरम, केएसआर बंगलूरु सिटी, सिकंदराबाद जंक्शन, विजयवाड़ा जंक्शन, पटना जंक्शन, जयपुर जंक्शन, अहमदाबाद जंक्शन, सूरत। इन स्टेशनों पर मानक के अनुरूप मिली सुविधाएं एनएसजी 5— बस्ता, दुल्लहपुर, फाजिल्का, फुर्केंटिंग, हाथरस जंक्शन, इंदरगढ़ सुमेरगंजमंडी, इज्जतनगर, कांथी, लक्सर, मथुरा कैंट, नीलेश्वर, परासिया, राय का बाग, सारनाथ, सुवासरा, तेतुलमारी एनएसजी 6— अंबासा, अररिया कोर्ट, बड़हरागंज, गिधनी, हरिचंदनपुर, मुनाबाव, नागोथाने, नकहा जंगल, नयागढ़ टाउन, नजरबाग, राधनपुर, राजघाट नरोरा, रामकनाली, रोशनपुर, रूपसा, सर एम विश्वेश्वरैया (टी) बंगलुरु, सोगरिया, सोनामुखी, तहसील भद्रा।

एसएसपी ने तोड़ी बर्बरता की सारी हदें

जेल में बंद समीर की मौत घरेलू हिंसा केस में 3 दिन पहले हुआ था दाखिल जिला अस्पताल में इलाज के दौरान तोड़ा दम



मेरठ,संवाददाता। मेरठ एसएसपी ने बर्बरता की सारी हदें तोड़ डाली। भाकियू नेताओं की बेरहमी से पिटाई के आरोप लगे हैं। आरोप है पिटाई से भाकियू नेताओं के दांत टूट गए। आंखों पर बूट से प्रहार किया गया। आरोप है कि एनकाउंटर की साजिश तक रची गई। शुक्रवार को मेरठ में भाकियू (बीआर आंबेडकर) के अध्यक्ष डॉ. दिग्विजय भाटी और मोहित जाटव प्रेस कॉन्फ्रेंस में फूट-फूटकर रो पड़े। मेरठ में भाकियू नेताओं से क्रूरता का मामला सामने आया है। किसान नेताओं ने एसएसपी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। आरोप है कि एसएसपी ने बर्बरता की सारी हदें तोड़कर बेरहमी से पीटा गया। इसके अलावा थाने के अंदर गानों पर नचवाया गया। सपा विधायक अतुल प्रधान के आवास पर शुक्रवार को पत्रकारों के सामने आंख, हाथों की उंगलियां और पैरों पर चोट के नीले निशान दिखाकर भाकियू (बीआर आंबेडकर) के अध्यक्ष डॉ. दिग्विजय भाटी और मोहित जाटव फूट-फूटकर रो पड़े। दोनों किसान नेताओं ने दो दिन पहले एसएसपी कार्यालय में पुलिस की ओर से किए गए अमानवीय बर्ताव की विस्तार से जानकारी दी। बताया कि एसएसपी और इंस्पेक्टर सिविल लाइन अखिलेश गौड़ ने उन्हें बेरहमी से पीटा। बर्बरता की हद पार करते हुए आंखों पर बूट से प्रहार किया। इससे आंख पर गंभीर चोट आई और दांत तक टूट गए। दावा किया कि पुलिस उनका एनकाउंटर करना चाह रही थी। शुक्रवार को रो-रोकर दिग्विजय भाटी ने पुलिस की बेरहम पिटाई से अपने शरीर पर हुए घाव दिखाए। बताया कि 19 अगस्त को वह अपने जिलाध्यक्ष मोहित जाटव के साथ एसएसपी अविनाश पांडेय से मिलने गए थे। ललिता गौतम हत्याकांड से जुड़े विरोध-प्रदर्शन मामले में पुलिस ने हम



8–10 लोगों को जेल भेज दिया था। जबकि, हमारी कोई गलती नहीं थी। न ही हम प्रदर्शन में शामिल थे। इसलिए हम कप्तान को सच बताने गए थे। दिग्विजय भाटी ने कहा कि पुलिसवालों ने बर्बरता की सभी हदें पार कर दीं। पुलिस वालों ने पहले तो हमें पीट-पीटकर अधमरा किया, इसके बाद मोबाइल पर खलनायक फिल्म का गाना बजाकर हमें बार-बार नचवाते रहे। सरधना के सपा विधायक अतुल प्रधान ने कहा कि जो बर्बरता एसएसपी और सिविल लाइन इंस्पेक्टर ने की वह चिंताजनक है। सरकार को पूरे प्रकरण का संज्ञान लेकर मुकदमा दर्ज करना चाहिए। सपा विधायक अतुल प्रधान के आवास पर प्रेसवार्ता में दिग्विजय भाटी ने कई सनसनीखेज आरोप लगाए। भाटी ने बताया कि पहले उन्हें और मोहित जाटव को एसएसपी दफ्तर में पीटा गया, उसके बाद सिविल लाइंस थाना प्रभारी अखिलेश गौड़ को बुलाया गया। भाटी ने बताया कि कप्तान के ऑफिस से सिविल लाइन थाना प्रभारी अखिलेश गौड़ उन दोनों को एसओजी दफ्तर ले गए। वहां जाकर दोनों से एक-दूसरे के हाथ-पैर बंधवाए गए। बुरी तरह पीटने के बाद कहा गया कि अब डांस करना है। फिर इंस्पेक्टर अखिलेश गौड़ ने मोबाइल पर खलनायक फिल्म का गाना- चोली के

पीछे क्या है बजाया और पहले भाटी को नचवाया। इसके बाद मोहित जाटव से कहा कि दोनों गाना गाओ और नाचो। मोहित ने बताया कि बुरी तरह पीटे जाने के बाद वह दोनों सिर्फ हाथ भर हिला पा रहे थे। कुछ देर बाद वह बोले कि उन्हें नींद की झपकी लग गई थी। अब दोबारा नाचो। वह उन पर सिर पर कपड़ा डालकर नाचने का भी दबाव बना रहे थे। इस बार छत पर सोया था बहनोई... फिल्मी गीत चलवाया और नाचने के लिए कहा। दिग्विजय का दावा है कि एसएसपी उनके एनकाउंटर की योजना बना चुके थे। एसएसपी ने पुलिसवालों से कहा था कि एक गोली मुझे मारो और फिर इनका एनकाउंटर कर दो। मैं सब देख लूंगा। हाथों की उंगलियों पर लाठी मारते रहे। कहते रहे कि इन हाथों से चार दिन भी रोटी नहीं खा पाओगे। जैसे जैसे सरधना विधायक अतुल प्रधान छुड़ाकर लाए। दिग्विजय भाटी ने रोते हुए बताया कि आठ जुलाई के प्रदर्शन में हम लोग शामिल नहीं थे, फिर भी हमें टारगेट किया गया। एक गरीब परिवार को न्याय दिलाने के लिए आगे आए थे। ऐसा ही अगर होता रहा तो कोई भी किसी भी जरूरतमंद की मदद के लिए आगे नहीं आएगा। मोहित जाटव का कहना था कि वह अपने समाज के नेता हैं। ऑफिस जाने से पहले उनकी पुलिस अफसर से फोन पर बात हुई थी। जिस तरह का व्यवहार फोन पर था, उस तरह का व्यवहार सामने बिल्कुल नहीं था। **पिटाई प्रकरण में फंसता देख पुलिस ने चला दांव** दरअसल इस मामले में पुलिस के आला अधिकारियों ने बचने का रास्ता खोजने के लिए पहले ही नई कहानी रच ली थी। पिटाई का मामला तूल पकड़ने पर मेरठ पुलिस ने एक्स पर दिग्विजय भाटी और मोहित का आपराधिक इतिहास शेयर कर दिया। दोनों के वायरल वीडियो का जवाब देते हुए मेरठ पुलिस के एक्स हैंडल पर लिखा कि दिग्विजय भाटी और मोहित अपने-अपने थानों के हिस्ट्रीशीटर हैं। दिग्विजय भाटी पर 10 और मोहित पर सात मामले दर्ज हैं। उनकी ओर से पुलिस पर लगाए गए आरोप असत्य और निराधार हैं। दोनों लोगों को स्कूटी से फिसल कर चोटिल होना बता दिया गया।

जेल में बंद समीर की मौत घरेलू हिंसा केस में 3 दिन पहले हुआ था दाखिल जिला अस्पताल में इलाज के दौरान तोड़ा दम

गोरखपुर,संवाददाता। जेल प्रशासन के अनुसार, 21 अगस्त की शाम अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई और उसे दौरा पड़ा। जेल में प्राथमिक उपचार दिया गया, लेकिन हालत में सुधार नहीं होने पर उसे तत्काल जिला अस्पताल भेजा गया। जिला अस्पताल के इमरजेंसी विभाग में चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे भर्ती कर इलाज शुरू किया। गोरखपुर जिला जेल में तीन दिन पहले दाखिल हुए 30 वर्षीय विचाराधीन बंदी समीर शेख की शनिवार को इलाज के दौरान मौत हो गई। वह पीपीगंज क्षेत्र के जसवल बाजार का रहने वाला था। घरेलू हिंसा अधिनियम से जुड़े एक मामले में पुलिस कार्रवाई के बाद उसे तीन दिन पहले न्यायालय के आदेश पर जेल भेजा गया था। जेल अधीक्षक दिलीप कुमार पांडेय ने बताया कि समीर शेख को 19 अगस्त 2026 को जिला जेल में दाखिल किया गया था। वह पहले से क्रॉनिक अल्कोहलिक था और लीवर व

किडनी संबंधी बीमारी से पीड़ित था। जेल प्रशासन के अनुसार, 21 अगस्त की शाम अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई और उसे दौरा पड़ा। जेल में प्राथमिक उपचार दिया गया, लेकिन हालत में सुधार नहीं होने पर उसे तत्काल जिला अस्पताल भेजा गया। जिला अस्पताल के इमरजेंसी विभाग में चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे भर्ती कर इलाज शुरू किया। जेल प्रशासन के मुताबिक, इलाज के दौरान उसकी हालत गंभीर बनी रही और रात करीब 8रु30 बजे विशेषज्ञ चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मृतक बंदी के परिजनों को दे दी गई है। जेल प्रशासन ने नियमानुसार आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। शव का पंचनामा और पोस्टमार्टम कराने के लिए सक्षम मजिस्ट्रेट नामित करने का अनुरोध किया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारणों की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

नेपाल में क्यों सुलग रही सांप्रदायिक आग

बंगाल से रोहिंग्याओं का पलायन और बदली डेमोग्राफी बनी बड़ी वजह!

गोरखपुर,संवाददाता। सुनसरी में जुलाई के अंतिम सप्ताह हुए सांप्रदायिक बवाल के बाद समूचे नेपाल में उठी हिंदू राष्ट्र की मांग के साथ वहां रोहिंग्या घुसपैठ का मुद्दा भी गर्मा गया है। लोग पिछले कुछ वर्षों में बदली डेमोग्राफी को लेकर सवाल खड़े कर रहे हैं, तो वहीं रोहिंग्या घुसपैठ बढ़ने की आशंका में सख्ती की जरूरत भी बता रहे हैं। इस बीच बंगाल में ममता बनर्जी की हार की चर्चा भी तराई में अब भी चल रही है। लोग कह रहे हैं कि बंगाल में सत्ता परिवर्तन से वहां अवैध ढंग से रह रहे रोहिंग्या पलायन कर रहे हैं। बंगाल से सटे सीमा क्षेत्रों में घुसपैठ कर इनके शरण लेने की आशंका सुरक्षा एजेंसियों ने भी जताई है। नेपाल के सिद्धार्थ नगर पालिका के होटल एसोसिएशन के एडवाइजर विष्णु शर्मा के मुताबिक, हाल ही में सुनसरी में हुई सांप्रदायिक टकराव की घटना के बाद प्रहरी-प्रशासन ने रोहिंग्या घुसपैठ को लेकर सतर्कता बढ़ाई है। सुनसरी, काकरभिट्टा, विराटनगर, जोगबनी जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों में रोहिंग्या घुसपैठ की आशंका जताई जा रही है। स्थानीय मीडिया में इस तरह की आशंका जताते हुए खबरें आ चुकी हैं। जहां मुस्लिम आबादी अधिक है, वहां घुसपैठियों को शरण देने के मामले भी सामने आए हैं। अचानक से बड़ी घुसपैठ की आशंका के पीछे बंगाल में हुआ बदलाव भी अहम कारण है। विष्णु शर्मा कहते हैं कि रोहिंग्या घुसपैठ

भारत-नेपाल के साझा हितों से जुड़ा मुद्दा है। नेपाल में शरण लेने वाले रोहिंग्या यहां की डेमोग्राफी बदलकर सामाजिक ताने-बाने को नुकसान पहुंचाएंगे, तो वहीं ये घुसपैठिये भारत में जाकर आतंकी घटनाएं अंजाम दे सकते हैं। इसलिए भारत से मजबूत संबंधों के लिए इनकी घुसपैठ पर सख्ती से अंकुश लगाना बहुत आवश्यक है। सिद्धार्थ नगर पालिका निवासी हिंदूवादी संगठन के नेता श्रीचंद गुप्ता भी पूर्वी नेपाल में रोहिंग्या घुसपैठ पर चिंता जताते हैं। वह उन खबरों का जिक्र करते हैं जिनके जरिये बंगाल चुनाव के बाद काकरभिट्टा बार्डर होकर बंगाल से पलायन कर कई रोहिंग्या मुसलमानों के नेपाल आने की बातें सामने आई थीं। तब वहां उनके कई शरणदाता भी सामने आए थे। इन्हीं शरणदाताओं की शह पर सुनसरी जैसी दुस्साहसिक घटना घटी। **वीडियो बना फंडिंग जुटा रहा रोहिंग्यों का मसीहा** नेपाल में बतौर कंटेंट क्रिएटर सक्रिय मोहम्मद उमर खान इंटरनेट प्लेटफार्म पर वीडियो बनाकर अपलोड करता है। इनमें वह रोहिंग्या मुसलमानों के नाम पर खुलेआम फंडिंग की अपील भी करता है। स्वयं को रोहिंग्या मुसलमानों का मसीहा बताता है। वह राष्ट्र निर्माण दल नेपाल से पूर्व में चुनाव भी लड़ चुका है। बदले माहौल में उस पर कार्रवाई की मांग भी तेज हुई है। इस मांग के साथ उसके वीडियो इंटरनेट मीडिया पर खूब प्रसारित हो रहे हैं।

योगी के साथ सेल्फी के लिए क्रेजी हुए जापानी बच्चे

लखनऊ, संवाददाता। सीएम योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास पर जापानी छात्रों से मुलाकात की और उन्हें भारतीय दर्शन से परिचित कराया। इस मौके पर जापानी छात्र सीएम योगी के साथ तस्वीर खिंचवाने के लिए काफी उत्साहित नजर आए। मुख्यमंत्री आवास पर शुक्रवार को एक ऐसा दृश्य देखने को मिला जिसमें कूटनीति की औपचारिकता की जगह बच्चों की मुस्कान थी, भाषाओं की दूरी की जगह संवाद था और दो देशों की संस्कृति के बीच दोस्ती का एक सहज सेतु बनता दिखाई दे रहा था। उत्तर प्रदेश—जापान निवेश बैठक के क्रम में आयोजित विशेष कार्यक्रम 'ए डायलॉग विद द फ्यूचर' में जापान के यामानाशी प्रान्त से आए 13 विद्यार्थियों और उनके फैंकल्टी सदस्यों ने लखनऊ के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और यामानाशी प्रान्त के गवर्नर कोटारो नागासाकी की मौजूदगी में हुआ यह संवाद आने वाले भारत—जापान संबंधों की उस तस्वीर को सामने ला रहा था, जिसकी नींव आज की युवा पीढ़ी के मन में रखी जा रही है।

मुख्यमंत्री ने जापान के यामानाशी से आए विद्यार्थियों और उनके फैंकल्टी सदस्यों तथा लखनऊ के युवा साथियों का आत्मीय स्वागत करते हुए जापानी



अभिवादन ओहायो गोजाइमासु से अपने संबोधन की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी है और 25 करोड़ से अधिक आबादी वाला उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यह प्रदेश भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का प्रमुख केंद्र है और इसे 'हार्टलैंड ऑफ इंडिया' के रूप में भी देखा जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह केवल विद्यार्थियों का मिलन नहीं है। यह दो संस्कृतियों, दो परंपराओं और दो देशों

की युवा पीढ़ियों का मिलन है। अगले वर्ष भारत और जापान के राजनयिक संबंधों की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं और ऐसे समय में दोनों देशों के ये विद्यार्थी भविष्य के राजदूत के रूप में इस संबंध को नई ऊंचाई देने की क्षमता रखते हैं।

उन्होंने कहा कि एक ओर भारत की सबसे बड़ी युवा कार्यशक्ति वाले उत्तर प्रदेश के बच्चे हैं और दूसरी ओर तकनीक, परंपरा और प्रतिबद्धता के लिए पहचाने जाने वाले जापान के बच्चे। एक बच्चा लखनऊ के किसी गांव से आया है और दूसरा जापान के किसी गांव से। एक हिंदी बोलता है, दूसरा जापानी, लेकिन दोनों के बीच सबसे बड़ी समानता यह है कि दोनों अपने भविष्य की कहानी लिख रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जापान से आए विद्यार्थियों के लिए भारत की विविधता

में एकता, वसुधैव कुटुम्बकम्, भारतीय भाषाओं, दर्शन, पर्व और त्योहारों तथा उत्तर प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझने का यह अवसर है।

उन्होंने कहा कि जापान की नई पीढ़ी भारत को केवल एक बाजार के रूप में नहीं, बल्कि एक साझा सभ्यतागत मित्र के रूप में जाने, यह इस संवाद की बड़ी उपलब्धि होगी। वहीं भारतीय विद्यार्थियों के लिए जापान की कार्य संस्कृति, जीवन दर्शन, अनुशासन, 'इकीगाई', टीमवर्क, पारस्परिक सम्मान, स्वच्छता, समयबद्धता, पारंपरिक कलाओं और उत्सवों को समझने का अवसर है। उन्होंने कहा कि आदान—प्रदान कार्यक्रम की सबसे बड़ी ताकत ही यही है कि दोनों देश एक—दूसरे से सीखें और अपनी श्रेष्ठ बातों को साझा करें।

सपा प्रमुख द्वारा अपनी पुरानी सहयोगी पार्टी राष्ट्रीय लोकदल व उस पार्टी के नेता, केंद्रीय मंत्री के बारे में चवन्नी से रुपया बनाने वाला बयान देना पूरी तरह से अमर्यादित, अशोभनीय



मायावती, BSP चीफ

मायावती ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर समाजवादी पार्टी पर 6 बड़े आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा, 'समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख द्वारा अपनी पुरानी सहयोगी पार्टी राष्ट्रीय लोकदल व उस पार्टी के नेता, केंद्रीय मंत्री के बारे में चवन्नी से रुपया बनाने वाला बयान देना पूरी तरह से अमर्यादित, अशोभनीय व अति—शर्मनाक है तथा इस प्रकार की अहंकारी व अलोकतांत्रिक बयानबाजी के लिए उन्हें उस पार्टी से व उनके नेता से ही नहीं बल्कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह जी के परिवार और जाट समाज का अपमान करने के लिए तुरंत माफी मांगनी चाहिए।

घर डूबे, अपने बिछड़े... बाढ़ में बेबस हुई जिंदगी, बाढ़ में फंसे लोगों को SDRF ने सुरक्षित बचाया



गोबर की छींटों के बीच बन रही थीं मिठाइयां परिसर में 40-50 भैंसों बंधी थी



लखनऊ, संवाददाता। काकोरी स्थित एक मिठाई प्रतिष्ठान में गंदगी और गोबर के बीच मिठाइयां बनती मिलीं। परिसर में बड़ी संख्या में भैंसों बंधी थीं। जांच में दूषित मिठाइयां, खराब घोल और अस्वच्छ व्यवस्था मिली। खाद्य सुरक्षा विभाग ने प्रतिष्ठान बंद कराया, सामग्री जब्त की और नमूने जांच के लिए भेजे। लखनऊ में काकोरी के हरदोईया लालनगर स्थित शिवाछी स्वीट में शुक्रवार को खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन की टीम ने जांच के दौरान गंभीर अनियमितताएं पकड़ीं। यहां गंदगी के बीच मिठाइयां बनती मिलीं। परिसर में 40 से 50 भैंसों बंधी थीं और उनके गोबर की छींटें तैयार मिठाइयों पर पड़ रहे थे। इसके बाद विभाग ने प्रतिष्ठान को तत्काल बंद करा दिया। सहायक आयुक्त द्वितीय (खाद्य) विजय प्रताप सिंह ने बताया कि मौके से करीब 1000 लीटर मिठाई बनाने का घोल मिला, जिसमें मरी हुई मक्खियां पड़ी थीं। इसके अलावा 1,675 किलो मिठाइयां दूषित मिलीं। इनमें 1,000 किलो कलाकंद, 300 किलो डोडा बर्फी, 350 किलो चिकनी बर्फी और 25 किलो पेड़ा शामिल है।

सहायक आयुक्त द्वितीय (खाद्य) विजय प्रताप सिंह ने बताया कि मौके से करीब 1000 लीटर मिठाई बनाने का घोल मिला, जिसमें मरी हुई मक्खियां पड़ी थीं। इसके अलावा 1,675 किलो मिठाइयां दूषित मिलीं। इनमें 1,000 किलो कलाकंद, 300 किलो डोडा बर्फी, 350 किलो चिकनी बर्फी और 25 किलो पेड़ा शामिल है।

चिकनी बर्फी और 25 किलो पेड़ा शामिल है। कुल 2,675 किलो दूषित खाद्य पदार्थ नष्ट कराने का निर्णय लिया गया। देर रात कार्रवाई पूरी होने के कारण सामग्री को कमरे में रखकर सील कर दिया गया, जिसे अगले दिन टीम की मौजूदगी में नष्ट किया जाएगा।

जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा

टीम ने 686 किलो खाद्य सामग्री भी जब्त की, जिसकी कीमत 79,170 रुपये है। इसमें सूजी, स्किम्ड मिल्क पाउडर, बूंदी, मूंगफली, गरी लच्छा, फिटकरी और अन्य सामग्री शामिल है। इस मौके पर लिए गए 15 नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा।

दो शूटर—चार साजिशकर्ता गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। कारोबारी और मदरसा संचालक की हत्या की सुपारी लेने वाले दो शूटरों समेत चार साजिशकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार आरोपियों का मकसद कारोबारी की संपत्ति हड़पना था।

गिरफ्तार लोगों में दो अधिवक्ता और मदरसा प्रबंधक भी शामिल हैं। पुलिस ने हथियार, मोबाइल और चोरी की बाइक बरामद की है। हजरतगंज के डालीगंज स्थित रिवेरा कॉलोनी निवासी कारोबारी व मदरसा संचालक इरफान अहमद की हत्या की सुपारी लेने वाले दो शूटरों और चार साजिशकर्ताओं को हजरतगंज पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

पान मसाला कारोबार में 185 करोड़ की टैक्स चोरी चित्रकूट—बांदा में छापेमारी, देशभर में 17 गिरफ्तारियां

लखनऊ, संवाददाता। डीजीजीआई की लखनऊ इकाई ने चित्रकूट और बांदा में पान मसाला, जर्दा और गुटखा के अवैध कारोबार का खुलासा किया। छापेमारी में बड़ी मात्रा में तैयार पाउच, कच्चा माल और मशीनें बरामद हुईं।

जांच में करीब 185 करोड़ रुपये की कर—उपकर चोरी सामने आई। मामले में एक कारोबारी गिरफ्तार हुआ है। जीएसटी खुफिया महानिदेशालय (डीजीजीआई) की लखनऊ क्षेत्रीय इकाई ने चित्रकूट और बांदा में पान मसाला, सुगंधित जर्दा और गुटखा के अवैध उत्पादन व कर चोरी से जुड़े नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। करीब 185 करोड़ रुपये की कर—उपकर चोरी सामने आई।

18 अगस्त की आधी रात छह परिसरों में हुई तलाशी में 27 अघोषित पाउच—पैकिंग मशीनें जब्त की गईं। इनमें सुगंधित जर्दा की छह, पान मसाला की नौ और दोहरा/देसी गुटखा

की 12 मशीनें हैं। दोनों फर्मों में एक उत्पादन और दूसरी व्यापारिक गतिविधियों से जुड़ी थी।

तलाशी में 1550922 तैयार पाउच, 32.9 टन सुपारी, 2.8 टन तंबाकू, 8.4 टन पैकिंग सामग्री, 470 किलो कच्चा पाउडर, 850 किलो ग्लिसरीन, 545 किलो एसएस और 256 किलो बिना पैक पान मसाला मिला। मिश्रण, सुपारी क्रशिंग व सुखाने वाली मशीनें भी बरामद हुईं। जांच में बिना जीएसटी, एचएसएनएस उपकर और केंद्रीय उत्पाद शुल्क चुकाए माल बाजार में भेजने का खुलासा हुआ। निर्माण फर्म के मालिक को 19 अगस्त को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। एक फरवरी 2026 से पान मसाला—तंबाकू क्षेत्र में क्षमता आधारित उपकर व्यवस्था लागू है। डीजीजीआई के अनुसार, देशभर में ऐसे 27 मामलों में 668 करोड़ रुपये की चोरी पकड़ी गई और 17 लोग गिरफ्तार हुए हैं।

गोरखपुर में हादसा—तेज रफ्तार ट्रेलर ने मां—बेटे को कुचला, दोनों की मौत

गोरखापुर, संवाददाता। दोहरीघाट—आजमगढ़ मार्ग पर शुक्रवार को एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने बाइक सवार मां—बेटे को टक्कर मारी। बिंदु देवी (42) और उनके 16 वर्षीय पुत्र सूरज यादव की मौके पर ही मौत हो गई। यूपी के गोरखपुर जिले के दोहरीघाट—आजमगढ़ मार्ग पर शुक्रवार को तेज रफ्तार ट्रेलर की चपेट में आने से बाइक सवार मां—बेटे की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा दोहरीघाट थाना क्षेत्र के रामनगर पुलिस बूथ के पास सुबह करीब 11 बजे हुआ। दुर्घटना के बाद चालक ट्रेलर को कुछ दूर खड़ा कर फरार हो गया। पुलिस ने ट्रेलर को कब्जे में लेकर



बिना परिजन के दोनों शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। गोरखपुर जनपद के बड़हलगंज थाना क्षेत्र के बेलवा गांव निवासी बिंदु देवी (42) पत्नी राजकुमार अपने 16 वर्षीय पुत्र सूरज यादव के साथ बाइक से आजमगढ़ दवा लेने जा रही थीं। दोनों रामनगर पुलिस बूथ के पास पहुंचे ही थे कि सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रेलर ने

उनकी बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर के बाद मां—बेटे बाइक समेत ट्रेलर के नीचे आ गए। चालक ट्रेलर रोकने के बजाय दोनों को कुचलते हुए कुछ दूर तक चला गया। जिससे दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद घटनास्थल पर आसपास के लोगों की भीड़ जुट गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आनन—फानन में परिजनों के बगैर दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने ट्रेलर को भी कब्जे में लेकर थाने पहुंचाया। घटना की जानकारी मिलते ही मृतकों के परिजन मौके पर पहुंच गए और ट्रेलर चालक के खिलाफ तहरीर दी।

यूपी में दर्दनाक हादसा

कांवड़ियों की ट्रैक्टर-ट्राली को ट्रक ने मारी जोरदार टक्कर दो की मौत और कई गंभीर घायल



संवाददाता,शाहजहाँपुर। बमिहाना गांव से 15 कांवड़ियों का जत्था गुरुवार की रात करीब 12 बजे ट्रैक्टर-ट्रॉली से बदायूं के दातागंज के डांडी घाट के लिए रवाना हुआ था। जैतीपुर थाना क्षेत्र के बमिहाना गांव से कांवड़ लेने गए 15 कांवड़ियों की ट्रैक्टर-ट्राली में शुक्रवार सुबह नवादा मोड़ के पास तेज रफ्तार ट्रक से पीछे से टक्कर लग गई।

हादसे में दो कांवड़ियों की मौत हो गई, जबकि कई गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। बमिहाना गांव से 15 कांवड़ियों का जत्था गुरुवार की रात करीब 12 बजे ट्रैक्टर-ट्रॉली से बदायूं के दातागंज के डांडी घाट के लिए रवाना हुआ था। वहां से रामगंगा नदी से जल लेकर शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे सभी अपने गांव के शिव मंदिर के लिए लौट रहे थे। नवादा मोड़ पुलिस चौकी से करीब 500 मीटर पहले दातागंज की ओर

से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक से ट्रैक्टर-ट्रॉली को टक्कर लग गई। ट्रैक्टर-ट्रॉली सड़क किनारे लगे बिजली के पोल को तोड़ते हुए खाई में पलट गई। हादसे में ट्रैक्टर-ट्रॉली पर बैठे कांवड़िये गंभीर रूप से घायल हो गए। आगे कांवड़ लेकर चल रहे शिवम मिश्रा समेत कुछ अन्य साथी भी ट्रक की चपेट में आकर घायल हो गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायलों को एंबुलेंस से अस्पताल भेजा। कुछ घायलों को बरेली ले जाया गया, जहां बमिहाना निवासी अमन (20) और गुड्डू (30) को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। अन्य घायलों का जैतीपुर के निजी अस्पताल में उपचार चल रहा है, जबकि राजकीय मेडिकल कॉलेज, शाहजहाँपुर रेफर किया गया है। एसपी सौरभ दीक्षित ने बताया कि ट्रक चालक पुलिस हिरासत में है। उसका सीएचसी में इलाज चल रहा है। तहरीर के अनुसार प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

मां-बाप के अरमानों का कत्ल

जिस बेटी को दुल्हन बनते देखना था, उसकी खून से सनी लाश देख मां का फट गया कलेजा

वाराणसी,संवाददाता। धारदार हथियार से गला रेतकर युवकी की हत्या की गई। युवती की शादी तय हो चुकी थी, वह अपने माता- पिता की इकलौटी संतान थी। ऐसे में परिजनों ने संपत्ति के लालच में हत्या करने का आरोप लगाया है। वाराणसी जिले में जगतपुर पीजी कॉलेज में एमएससी की छात्रा श्रेया उर्फ मोनू (22) की हत्या कर दी गई। घटना उसके घर से 20 किमी दूर बच्छांव पश्चिमपुरा के एक किराये के कमरे में हुई। धारदार हथियार से गला रेतकर श्रेया को मौत के घाट उतार दिया गया। आरोप है कि दूर के रिश्तेदार नियारडीह चोलापुर निवासी विवेक चौबे ने उसे अगवा कर हत्या की है। हत्या के बाद आरोपी ननिहाल गया। अपनी बाइक और बैग रखकर भाग निकला। उधर, बेटी की खून से सनी लाश देखकर मां का कलेजा फट गया। उसकी चीख- पुकार सुनकर लोगों की आंखें भर आईं।

परिजनों के मुताबिक, श्रेया इकलौती थी। उसकी शादी तय हो चुकी थी। 22 नवंबर को उसकी रिंग सेरेमनी और 26 फरवरी को शादी थी। शादी की तैयारियां शुरू हो गई थीं। परिजनों ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए। परिजनों ने प्रेम प्रसंग जैसी बात को नकारा। आरोप है कि विवेक जबरन श्रेया से बातचीत करता था। वीडियो कॉल पर युवती के पिता की हत्या करने की धमकी देता था। युवती ने पिता से शिकायत भी की थी। आरोपी को समझाया भी गया था। आरोपी चाहता था कि घर की अकेली लड़की है, अगर इससे शादी हो जाती है तो प्रॉपर्टी उसके नाम हो जाएगी। इस बीच श्रेया की शादी मिर्जापुर में तय हो गई। इस बात से नाराज विवेक चौबे ने श्रेया का अपहरण कर उसकी हत्या कर दी। वहीं, मृतका के मोबाइल को फॉरेंसिक टीम ने जांच के लिए कब्जे में लिया है। पुलिस मोबाइल में कॉल डिटेल, चॉट, फोटो, वीडियो और अन्य डिजिटल साक्ष्यों की जांच कर रही है। श्रेया के पिता सुनील उपाध्याय की चंदापुर में कपड़े की दुकान है। श्रेया की मां रीता उपाध्याय ने आरोप लगाया कि उनकी बेटी कॉलेज पहुंची ही नहीं थी। आशंका है कि आरोपी ने उसे रास्ते से ही अगवा किया और उसी दिन

प्रेम-प्रसंग, सात बीघा जमीन का लालच या कुछ और... छात्रा की हत्या में कई एंगल पर जांच कर रही पुलिस



हत्या कर दी।
मकान मालिक और आरोपी के पिता हिरासत में
घटना के बाद रोहनिया पुलिस ने मकान मालिक विवेक द्विवेदी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि विवेक चौबे कमरे में कब से रह रहा था, छात्रा वहां कब पहुंची और हत्या के पीछे वास्तविक वजह क्या थी। रोहनिया पुलिस के अनुसार, आरोपी एक बैंक में संविदाकर्मी रहा और प्रधानी का चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा था। क्राइम ब्रांच की टीम आरोपी के गांव पहुंची और आरोपी के पिता को हिरासत में लिया।
ननिहाल में छोड़े बैग में मिली चाबी

19 अगस्त की सुबह परिजन दोबारा बच्छाव पहुंचे और आसपास पूछताछ शुरू की। मकान मालिक विवेक से पता चला कि विवेक चौबे नाम का युवक दो महीने से किराये पर कमरा लेकर रह रहा था। मकान मालिक ने उसका आधार कार्ड भी परिजनों को भेजा। इससे परिजनों को युवक पर शक गहरा गया। मृतका के पिता का कहना है कि उन्होंने कमरे को खुलवाने का काफी प्रयास किया, लेकिन कमरा नहीं खुला। इसके बाद परिवार विवेक के ननिहाल भुवालपुर, सीखड़, मिर्जापुर पहुंचा। वहां लोगों ने बताया कि विवेक 18 अगस्त की शाम आया था। अपना बैग और मोटरसाइकिल छोड़कर चला गया था। बैग में कमरे की चाबी मिली। इसके बाद चाबी लेकर बृहस्पतिवार सुबह 10:30 बजे बच्छाव के मकान पहुंचे और कमरे विवेक चौबे का

दरवाजा खोला गया। अंदर बाथरूम में श्रेया का शव खून से लथपथ पड़ा मिला।
कॉलेज जाने की बात कहकर निकली, फिर वापस नहीं लौटी
मृतका के चचेरे भाई अंशुमान के अनुसार, श्रेया 18 अगस्त को घर से कॉलेज जाने की बात कहकर निकली थी। देर शाम तक घर नहीं पहुंची तो परिजनों ने कॉलेज जाकर जानकारी की। पता चला कि श्रेया कॉलेज ही नहीं आई थी। इसके बाद परिवार राजातालाब थाने पहुंचा और फिर जकिखनी पुलिस चौकी में सूचना दी गई। पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर छात्रा के मोबाइल की लोकेशन खंगालनी शुरू की। परिजनों ने पुलिस पर लगाए गंभीर आरोप परिजनों के अनुसार, मोबाइल की लोकेशन बच्छाव पश्चिमपुरा के एक मकान में मिली। रात 11 बजे वे पुलिस के साथ वहां पहुंचे। उस समय छात्रा को मोबाइल चालू था और लोकेशन उसी मकान से आ रही थी। परिवार को उम्मीद थी कि श्रेया कमरे के अंदर होगी। पिता सुनील उपाध्याय का आरोप है कि पुलिस ने कुछ देर जांच-पड़ताल करने के बाद दरवाजा नहीं खुलवाया। परिजनों का आरोप है कि स्थानीय पुलिस को सूचना देकर कमरे की तलाशी नहीं कराई गई।मामले की जांच और आरोपी की गिरफ्तारी के लिए चार टीमें गठित की हैं। पुलिस अब मोबाइल लोकेशन, कॉल डिटेल, घटनास्थल से मिले साक्ष्य और आरोपी की गतिविधियों की जांच कर रही है।

—नीतू कात्यायन, डीसीपी गोमती जोन

पूरी होगी रानी की आखिरी इच्छा—राजघराने की जमीन विवाद में सामने आई वसीयत, आनंद भवन को लेकर था बड़ा सपना

कुशीनगर,संवाददाता। वसीयत के पैरा नौ में रानी ने पड़रौना स्थित अपने निवास आनंद भवन को सनातन धर्म के संरक्षण और संवर्धन के लिए उपयोग किए जाने की इच्छा जताई थी। इसमें वेदों की विभिन्न शाखाओं की परंपरा को संरक्षित करने, संस्कृत भाषा की उच्च शिक्षा देने और शोध पीठ के रूप में विकसित करने की बात कही गई थी।

यूपी के कुशीनगर स्थित पड़रौना राजघराने की संपत्तियों को लेकर चल रहे विवाद के बीच दिवंगत रानी रेवती देवी की हाईकोर्ट में दाखिल वसीयत की प्रति सामने आने के बाद सबकी नजरें टिक गई हैं।

ट्रस्ट की ओर से उपलब्ध कराई गई वसीयत की प्रति में राज परिवार की संपत्तियों और उनके उपयोग को लेकर कई महत्वपूर्ण बातें दर्ज हैं।

सनातन से था रानी का गहरा जुड़ाव
रानी रेवती देवी की कोई संतान नहीं थी। मूल रूप से नेपाल की रहने वाली रानी का सनातन धर्म के प्रति गहरा जुड़ाव बताया जाता है।

उन्होंने अपनी संपत्तियों की देखरेख के लिए ट्रस्ट का गठन करते हुए वसीयत तैयार कराई थी। बताया गया है कि रानी रेवती देवी की वसीयत 14 अप्रैल 1984 को तैयार हुई थी। इसमें उन्होंने अपनी पूरी चल-अचल संपत्ति का एक्जीक्यूटर अपने मैनेजर जय भारत मणि आचार्य दीक्षित को नियुक्त किया था।

रानी की वसीयत से खुलेगा जमीन का राज



चर्चा का विषय बनी राजघराने की कहानी

बाद में यह वसीयत हाईकोर्ट में दाखिल की गई। रानी का निधन मई 1984 में इलाहाबाद (अब प्रयागराज) स्थित उनके एनके मुखर्जी रोड, सिविल लाइंस स्थित आवास पर हुआ था। रानी रेवती की जमीन सिलिंग में निकलने का फैसला बुधवार आने के बाद रानी रेवती के राजघराने की कहानी शहरवासियों के बीच फिर एक बार चर्चा में आ गई।

आनंद भवन को संस्कृत शिक्षा और शोध पीठ बनाने की थी इच्छा
वसीयत के पैरा नौ में रानी ने पड़रौना स्थित अपने निवास आनंद भवन को सनातन धर्म के संरक्षण और संवर्धन के लिए उपयोग किए जाने की इच्छा जताई थी। इसमें वेदों की विभिन्न शाखाओं की परंपरा को संरक्षित करने, संस्कृत भाषा

की उच्च शिक्षा देने और शोध पीठ के रूप में विकसित करने की बात कही गई थी। रानी की वसीयत में संपत्तियों के प्रबंधन और उनके उपयोग को लेकर भी प्रावधान किए गए थे। ट्रस्ट से जुड़े लोगों का कहना है कि वसीयत के प्रावधानों को समझे बिना राजघराने की संपत्तियों को लेकर चल रहे विवाद की पूरी तस्वीर सामने नहीं आ सकती।

1988 से डीएम हैं संपत्तियों के रिसीवर

बताया गया कि रानी की मृत्यु से पहले 19 जुलाई 1988 को तत्कालीन विधिक परामर्शी (एडमिनिस्ट्रेटिव जनरल) को न्यास की संपत्तियों की देखरेख की जिम्मेदारी दी गई थी। इसके बाद से न्यायिक आदेश के क्रम में जिलाधिकारी कुशीनगर को इन संपत्तियों का रिसीवर नियुक्त किया गया है। इसके बावजूद

ट्रस्ट से जुड़े लोगों का आरोप है कि राजघराने की ज्यादातर जमीनों पर भू-माफिया ने कब्जा कर रखा है। बची हुई जमीनों पर भी कब्जा कर लिया है। लंबे समय से जिले में जमे चकबंदी और राजस्व विभाग के कुछ कर्मचारियों व अधिकारियों की भूमिका संलिप्त रही। कोर्ट का फैसला आने के बाद सिलिंग में जमीन निकल गई।

डीएम समेत 195 लोगों के खिलाफ अवमानना वाद के बाद बढ़ी सक्रियता
पड़रौना राजदरबार की विवादित जमीनों की खरीद-फरोख्त का मामला इलाहाबाद हाईकोर्ट पहुंच गया है। न्यायालय के रोक के आदेश और डीएम को रिसीवर नियुक्त किए जाने के बावजूद जमीनों की बिक्री किए जाने का आरोप लगाते हुए प्रयागराज हाईकोर्ट में अवमानना वाद दाखिल किया गया है। सूत्रों के अनुसार, रानी रेवती देवी रवि प्रताप न्यास की मुख्य ट्रस्टी डॉ. मधु दीक्षित की ओर से दाखिल वाद में आदित्य प्रताप नारायण सिंह समेत कुल 195 लोगों को पक्षकार बनाया गया है। इनमें विवादित जमीनों के रिसीवर के तौर पर नियुक्त डीएम कुशीनगर भी शामिल किया गया। इसके बाद जिला प्रशासन सक्रिय हुआ और मुकदमे की सुनवाई तेज हुई।

जिले के बड़े हिस्से में राजदरबार की जमीनें

पड़रौना राजदरबार की जमीनों का बड़ा

हिस्सा जिले के कई तहसील क्षेत्रों में फैला हुआ है। खासकर पड़रौना और खड्डा तहसील क्षेत्र में इन जमीनों को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा है। सीलिंग से जुड़े मामलों के बीच चकबंदी विभाग पर भी नियमों के विपरीत दूसरे लोगों के नाम राजस्व अभिलेखों में दर्ज किए जाने के आरोप पहले से लगते रहे हैं। राजदरबार से जुड़े एक पक्ष रानी रेवती देवी रवि प्रताप न्यास की ओर से इन जमीनों पर अधिकार की लड़ाई लड़ी जा रही थी।

डीएम को पक्षकार बनाने की बताई वजह

अवमानना वाद दाखिल करने वाले हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता ने बताया कि मुख्य ट्रस्टी डॉ. मधु दीक्षित की ओर से आदित्य प्रताप नारायण सिंह समेत 195 लोगों को वाद में पक्षकार बनाया था। ट्रस्टी मधु दीक्षित काठमांडू रहती है। वहां पर वह डाक्टर है। मधु दीक्षित के मैनेजर विजय अधिकारी ने बताया कि इन जमीनों का रिसीवर नियुक्त किया गया था। इसके बावजूद जमीनों की बिक्री किया गया। इसी वजह से डीएम को भी वाद में पक्षकार बनाया गया था। इसके अलावा जमीनों की खरीद-बिक्री से जुड़े अन्य लोगों को भी पक्षकार बनाया गया था। डीएम के हाईकोर्ट में पक्षकार बनाने के बाद मुकदमे की सुनवाई तेज हुई और रानी रेवती देवी की जमीन को सिलिंग घोषित किया गया।

क्या भाग्यश्री बोर्से के हाथ से फिसली आदित्य राय कपूर की फिल्म



एंटरटेनमेंट डेस्क। बीते दिनों एक खबर सामने आई थी कि अभिनेत्री भाग्यश्री बोर्से, आदित्य राय कपूर की आगामी फिल्म का हिस्सा होंगी। जानिए, मेकर्स ने इस खबर को लेकर क्या कहा है? साउथ की चर्चित अभिनेत्री भाग्यश्री बोर्से और बॉलीवुड अभिनेता आदित्य राय कपूर, डायरेक्टर मिलाप जवेरी की आगामी फिल्म का हिस्सा होंगे। फिल्मफेयर की एक रिपोर्ट पर आधारित यह खबर पिछले दिनों खूब चर्चा में रही। लेकिन अब नया अपडेट इस बारे में सामने आया है। इस फिल्म को लेकर टी-सीरीज प्रोड्यूस कर रहा है।

मेकर्स ने अभिनेत्री भाग्यश्री बोर्से को लेकर क्या कहा?

टी-सीरीज के एक प्रवक्ता ने कहा, 'आदित्य राय कपूर के साथ टी-सीरीज और मिलाप जवेरी एक फिल्म बना रहे हैं। इस प्रोजेक्ट में भाग्यश्री बोर्से के शामिल होने की खबरें गलत हैं। प्रोडक्शन हाउस जल्द ही अभिनेत्री के नाम का आधिकारिक घोषणा करेगा।' भाग्यश्री बोर्से तेलुगु, तमिल और हिंदी फिल्मों में अभिनय करती हैं। वह बॉलीवुड में यारियां 2 और चंदू चैपियन में छोटे लेकिन अहम किरदार निभा चुकी हैं। वहीं फिल्म विजय देवरकोंडा की फिल्म 'किंगडम' का भी वह हिस्सा रही हैं। वह एक तमिल फिल्म 'सियोन' भी कर रही हैं।

बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई के बाद अभिनय में आई अभिनेत्री

भाग्यश्री बोर्से का जन्म भारत के महाराष्ट्र के औरंगाबाद (अब छत्रपति संभाजीनगर) में हुआ था। वह सात साल तक नाइजीरिया के लागोस में रहीं, वहां अपनी स्कूली शिक्षा का बड़ा हिस्सा पूरा किया। बाद में मॉडलिंग करते हुए उन्होंने मुंबई में बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई की। लेकिन बिजनेस मैनेजमेंट में फिल्मा में कदम रखा।



आम्रपाली ने फैस को कहा शुक्रिया

एंटरटेनमेंट डेस्क। भोजपुरी अभिनेत्री आम्रपाली दुबे इन दिनों रियलिटी शो भोजपुरी बवाल में नजर आ रही हैं। इस बीच उन्हें एक बड़ी सफलता मिली है। इंस्टाग्राम पर उनके छह मिलियन फॉलोअर्स पूरे हुए हैं। आम्रपाली दुबे इन दिनों भोजपुरी बवाल को लेकर सुर्खियों में हैं। यहां उन्होंने अपने करियर और लाइफ पर कई दिलचस्प बातें साझा की हैं। इसके अलावा इस शो में अपने बयानों को लेकर भी वे लगातार चर्चा बटोर रही हैं। इस बीच आम्रपाली को इंस्टाग्राम पर एक सफलता मिली है। उनके फॉलोअर्स का कुनबा छह मिलियन का हो गया है।

आम्रपाली दुबे ने इंस्टाग्राम अकाउंट से आज गुरुवार को एक पोस्ट शेयर करके फैस से जानकारी साझा की है कि इंस्टाग्राम पर उनके छह मिलियन (60 लाख) फॉलोअर्स पूरे हो गए हैं। इसके साथ उन्होंने लिखा है, इंस्टा फेमिली छह मिलियन की हुई।

आप सभी को बहुत बहुत शुक्रिया और प्यार। आम्रपाली ने अपना एक वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें वे तितली शहर साँगा पर परफॉर्म करती दिखी हैं। भोजपुरी अभिनेत्री आम्रपाली दुबे इन दिनों रियलिटी शो भोजपुरी बवाल में नजर आ रही हैं। इस बीच उन्हें एक बड़ी सफलता मिली है। इंस्टाग्राम पर उनके छह मिलियन फॉलोअर्स पूरे हुए हैं। आम्रपाली दुबे इन दिनों भोजपुरी बवाल को लेकर सुर्खियों में हैं।

यहां उन्होंने अपने करियर और लाइफ पर कई दिलचस्प बातें साझा की हैं। इसके अलावा इस शो में अपने बयानों को लेकर भी वे लगातार चर्चा बटोर रही हैं। इस बीच आम्रपाली को इंस्टाग्राम पर एक सफलता मिली है। उनके फॉलोअर्स का कुनबा छह

मिलियन का हो गया है।

आम्रपाली ने फैस को कहा शुक्रिया

आम्रपाली दुबे ने इंस्टाग्राम अकाउंट से आज गुरुवार को एक पोस्ट शेयर करके फैस से जानकारी साझा की है कि इंस्टाग्राम पर उनके छह मिलियन (60 लाख) फॉलोअर्स पूरे हो गए हैं। इसके साथ उन्होंने लिखा है, इंस्टा फेमिली छह मिलियन की हुई। आप सभी को बहुत बहुत शुक्रिया और प्यार। आम्रपाली ने अपना एक वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें वे तितली शहर साँगा पर परफॉर्म करती दिखी हैं।

बच्चा गोद लेंगी आम्रपाली

आम्रपाली दुबे ने भोजपुरी बवाल शो में खुलासा किया कि वे बच्चा गोद लेंगी। उन्होंने बताया कि उनके इस फैसले लोक लेकर शुरुआत में उनके परिवार को यह बात थोड़ी अजीब लगी थी। हालांकि, बाद में उनकी मां मान गई। इसके अलावा शो में भोजपुरी सुपरस्टार दिनेश लाल यादव शनिरहुआर के साथ उनके कथित अफेयर को लेकर भी काफी तीखी बहस देखने को मिली थी।

पवन सिंह को दिया शादी का ऑफर!

भोजपुरी बवाल में आम्रपाली ने पावर स्टार पवन सिंह को भी शादी का ऑफर दिया। हालांकि, वह सिर्फ एक मजाक का हिस्सा था। आम्रपाली ने पावर स्टार से कहा, शैं सोच रही हूं कि अकेला बच्चा पालना बहुत मुश्किल होगा। ऐसा करते हैं ना कि हम और आप शादी कर लेते हैं फिर मिलकर बच्चे को पाल लेंगे। आम्रपाली के ऐसा कहते ही कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। फिर दोनों एक-दूसरे की तरफ देखकर जोर से हंस पड़े।

पवन सिंह ने जन्त जुबैर के साथ लगाए ठुमके

एंटरटेनमेंट डेस्क। भोजपुरी स्टार पवन सिंह ने जन्त



जुबैर के साथ ठुमके लगाए हैं। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। पवन सिंह ने प्यार से जुड़ा एक किस्सा सुनाया है। भोजपुरी स्टार पवन सिंह अपनी निजी जिंदगी के खुलासे को लेकर चर्चा में हैं। उनका नया शो भोजपुरी बवाल का नया प्रोमो चर्चा में है। इस प्रोमो में सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर जन्त जुबैर खास मेहमान बन कर आई। उन्होंने कलाकारों के साथ बातचीत की। यही नहीं उन्होंने पवन सिंह के साथ ठुमके भी लगाए। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है।

पवन सिंह ने सुनाया किस्सा

प्रोमो वीडियो में जन्त जुबैर ने भोजपुरी सितारों की निजी जिंदगी के बारे में बात की। जब बात प्यार और दिल के मामले की आई तो पवन सिंह ने एक बेहतरीन किस्सा शेयर किया।

दिल की बात जुबां पर आई

पवन सिंह ने जन्त जुबैर को बताया शमुझे किसी को आई लव यू बोलने में कम से कम डेढ़ साल का वक्त लगा था। कमाल की बात तो यह है कि वह प्यार बाद में खत्म भी हो गया। मैंने जिसे भी शिद्दत से चाहा, वह आखिर में मुझे मिल नहीं पाया।

पवन की बात सुन

जन्त

पवन सिंह के मुंह से की बातें सुनकर जन्त गई। सोशल मीडिया रिएक्शन वायरल हो ऐसा इसलिए क्योंकि अक्सर अपनी निजी बारे में कम ही बात

हैरान हुई

इस तरह हैरान हो पर उनके गए हैं। पवन सिंह जिंदगी के करते हैं।



अनुपमा ने खोले एक्स के राज

एंटरटेनमेंट डेस्क। अनुपमा परमेश्वरन दो साल तक एक खराब रिश्ते की शिकार रहीं। इसका खुलासा उन्होंने कुछ दिन पहले ही किया है। अब उन्होंने अपने रिश्ते से जुड़ी कुछ और कड़वी यादों साझा की हैं। इन दिनों अनुपमा परमेश्वरन अपने व्यक्तिगत जीवन के लेकर चर्चाओं में हैं। अपने पुराने रिलेशनशिप और उससे जुड़े दर्द के बारे में अब वह खुलकर सामने आ रही हैं। उन्होंने अपने तकलीफ भरे रिश्ते के बारे में काफी कुछ बताया।

अनुपमा परमेश्वरन ने क्या कहा?

बीते कई दिनों से एक्ट्रेस अनुपमा परमेश्वरन ने ध्यान वर्मा के यूट्यूब चैनल पर रिश्ते को लेकर कई खुलासा किये हैं। उन्होंने

या कि किस तरह उनके पार्टनर ने रिलेशनशिप के दौरान उनका उत्पीड़न किया। एक समय मैं ग्यारह बच्चे पैदा करने का सपना देखती थी।

मगर इस रिश्ते के बाद अब मैं बच्चे ही नहीं चाहती।

मेरे बॉयफ्रेंड ने मेरे आत्मविश्वास और पेशेवर उपलब्धियों के लेकर कई बार मुझे बहुत बुरा महसूस करवाया।

इस रिश्ते ने मेरे निजी जीवन और करियर दोनों में लिए गए मेरे कई फैसलों को प्रभावित किया।

मुझे कई बार एक महिला होने और यहां तक कि मेरे एक्टर होने पर भी शर्मिंदा महसूस कराया गया।

अपनी बातचीत में आगे अनुपमा परमेश्वरन ने कहा, 'पीरियड्स का पहला दिन हो, पांचवां दिन हो, दसवां दिन हो, पंद्रहवां दिन हो, बीसवां दिन हो, पच्चीसवां दिन हो, कोई भी दिन हो। अगर आप किसी व्यक्ति से उसकी गलती के बारे में पूछें, तो वो कहेगा— शरें, आपको पीएमएस हो रहा है, आपका पीरियड अभी आना बाकी है।' इसके ऐसा कहने पर मुझे बहुत शर्म आती थी। मुझे औरत होने पर बहुत बुरा लगता था। मुझे अपनी सारी उपलब्धियों पर ही बुरा लगने लगा था।

श्वेता
तिवारी
मांगी
मदद

एंटरटेनमेंट डेस्क। श्वेता तिवारी अपने एक वीडियो के चलते चर्चा में आ गई हैं। उन्होंने यह वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। इसमें उन्होंने महाराष्ट्र फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन के कमिशनर तुकाराम मुंडे से मदद मांगी है। महाराष्ट्र फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन के कमिशनर तुकाराम मुंडे की सोशल मीडिया पर काफी तारीफ हो रही है। नियमों और कानूनों का उल्लंघन करने वाले रेस्टोरेंट, कैटीन और दूसरी जगहों पर सख्त कार्रवाई करने की वजह से कई लोगों ने इस अधिकारी को असली सिंघम का नाम दिया है। जहां आम लोग अपनी शिकायतें बताने के लिए उन्हें टैग कर रहे हैं, वहीं एक चौकाने वाले डिलीवरी अनुभव के बाद टीवी स्टार श्वेता तिवारी भी इस मुहिम में शामिल हो गई हैं। अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर कॉकरोच का वीडियो शेयर करते हुए, श्वेता तिवारी ने डिलीवरी प्लेटफॉर्म और महाराष्ट्र FDA प्रमुख तुकाराम मुंडे को टैग किया। इस क्लिप में उन्होंने कहा, शरें उसके साथ कॉकरोच भी आ गया। ये देखिए, कॉकरोच पूरे घर में भाग रहा है। ये रहा, छोटा सा। तो, क्या हमें तुकाराम मुंडे जी को टैग करना चाहिए? मुंडे जी, अभी हमारे घर में कॉकरोच आ रहे हैं। आप कहाँ हैं, प्लीज ध्यान दीजिए।

क्या कुलदीप को पर्याप्त मौके नहीं दे रहे गिल?



स्पोर्ट्स डेस्क। भारत और श्रीलंका के बीच रविवार से दूसरा टेस्ट मैच खेला जाना है। इससे पहले पूर्व भारतीय बल्लेबाज मोहम्मद कैफ ने कप्तान शुभमन गिल पर निशाना साधा है। कैफ का मानना है कि गिल ने पहले टेस्ट मैच में कुलदीप यादव को गेंदबाजी का ज्यादा मौका नहीं दिया। श्रीलंका के खिलाफ गॉल में खेले गए पहले टेस्ट मैच में भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कुलदीप यादव को लंबा स्पेल नहीं दिया। अब इसे लेकर पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद कैफ ने कड़ी नाराजगी जताई है। कैफ का मानना है कि इससे यह साफ झलकता है कि कप्तान का इस कलाई के स्पिनर पर पूरा भरोसा नहीं है, जबकि कुलदीप भारतीय क्रिकेट के लिए एक अनोखा उपहार हैं।

पहले टेस्ट में सिर्फ 25 ओवर की गेंदबाजी

गॉल की स्पिन अनुकूल पिच पर जहां मानव सुथार ने 10 विकेट लिए और रवींद्र जडेजा ने भी बहुमूल्य विकेट चटकाए, वहीं कुलदीप यादव को काफी कम गेंदबाजी का मौका मिला। सुथार और जडेजा ने दोनों पारियों में लगभग 44-44 ओवर फेंके, वहीं कुलदीप को पूरे मैच में सिर्फ 25 ओवर ही मिल पाए। हालांकि भारत ने यह मुकाबला 165 रनों से जीत लिया। दोनों टीमों के बीच अब रविवार से सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच खेला जाना है।

कुलदीप को लंबे स्पेल देने पर दिया जोर

अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए मोहम्मद कैफ ने कहा, कुलदीप को इस्तेमाल के तरीके से यह साफ है कि शुभमन गिल को कुलदीप यादव पर पूरा भरोसा नहीं है। मेरे तजरिए से देखा जाए तो कुलदीप जैसा अनूठा गेंदबाज आपको बार-बार नहीं मिलता। ऐसे गेंदबाज इतिहास में सिर्फ एक या दो बार ही आते हैं। हमें भविष्य में जडेजा का विकल्प मिल सकता है, जैसे हमारे पास सुथार हैं। फिर हमारे पास अश्विन के बाद वाशिंगटन सुंदर आए, लेकिन कुलदीप एक अनोखा उपहार हैं।

सीजन बेस्ट के साथ नीरज चोपड़ा का शानदार कमबैक

नीरज चोपड़ा ने लुसाने में दिखाया दम

सीजन का सर्वश्रेष्ठ 88.05 मी. थ्रो, श्रीलंका के रुमेश शीर्ष पर

स्पोर्ट्स डेस्क। लुसाने डायमंड लीग में नीरज चोपड़ा ने 88.05 मीटर का सीजन बेस्ट थ्रो करते हुए दूसरा स्थान हासिल किया। रुमेश थरंगा 88.14 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ पहले स्थान रहे, जबकि एंडरसन पीटर्स 86.69 मीटर के साथ तीसरे स्थान पर रहे। भारत के स्टार जैवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने लुसाने डायमंड लीग में शानदार प्रदर्शन करते हुए 88.05 मीटर का सीजन बेस्ट थ्रो किया, लेकिन वह खिताब जीतने से महज 9 सेंटीमीटर से चूक गए। श्रीलंका के उभरते हुए स्टार रुमेश पथिरागे ने 88.14 मीटर के थ्रो के साथ पहला स्थान हासिल किया।

नीरज का 14 महीने बाद सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

28 वर्षीय नीरज ने अपने दूसरे प्रयास में 88.05 मीटर की दूरी तय की, जो इस सीजन में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। यह पिछले साल जून में पेरिस डायमंड लीग में 88.16 मीटर के

थ्रो के बाद उनका सबसे बेहतरीन प्रदर्शन भी है। नीरज का यह थ्रो नौ खिलाड़ियों वाले मजबूत फाइनल में उन्हें दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिए पर्याप्त रहा।

तीसरे प्रयास में पथिरागे ने पलटा मुकाबला

हालांकि, 23 वर्षीय रुमेश पथिरागे ने अपने तीसरे प्रयास में 88.14 मीटर का शानदार थ्रो करते हुए नीरज को पीछे छोड़ दिया। पथिरागे इस सीजन में लगातार शानदार फॉर्म में हैं और उन्होंने लुसाने में भी अपनी बेहतरीन लय जारी रखते हुए पहला स्थान अपने नाम किया।

पीटर्स तीसरे स्थान पर रहे

ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स 86.69 मीटर के थ्रो के साथ तीसरे स्थान पर रहे। उन्होंने यह दूरी अपने छठे और आखिरी प्रयास में हासिल की, जो उनका प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ थ्रो रहा।

दिल्ली कैपिटल्स में कप्तानी भूल जाओ

दिल्ली कैपिटल्स में दोबारा लौटे ऋषभ पंत को कप्तानी मिलने की उम्मीद है लेकिन भारत के पूर्व क्रिकेटर का मानना है कि उन्हें कप्तानी से दूर रहना चाहिए

स्पोर्ट्स डेस्क। भारतीय टीम के विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत अगले आईपीएल में अपनी पुरानी टीम दिल्ली कैपिटल्स में दिखाई देंगे। लखनऊ सुपरजायंट्स ने उन्हें दिल्ली से कुलदीप यादव से ट्रेड किया है। उम्मीद लगाई जा रही है कि वह एक बार फिर दिल्ली की कप्तानी करते हुए नजर आएंगे, लेकिन पंत को सलाह मिली है कि वह कप्तानी का ऑफर कबूल न करें। पंत ने अपने आईपीएल करियर की शुरुआत दिल्ली से ही की थी। हालांकि, 2025 के मेगा ऑक्शन में लखनऊ सुपर जायंट्स ने उन्हें 27 करोड़ की बड़ी रकम देकर खरीदा था। दो सीजन लखनऊ में बिताने के बाद वह दोबारा दिल्ली आ गए हैं।

नहीं करना चाहिए कप्तानी

लखनऊ में पंत कप्तान थे, लेकिन अपनी टीम को सफलता नहीं दिला पाए थे। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज वसीम जाफर का मानना है कि

अगर दिल्ली में भी पंत को कप्तानी का ऑफर मिलता है तो उन्हें न कह देना चाहिए। जाफर ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, अगर दिल्ली कैपिटल्स उन्हें कप्तानी का ऑफर देती भी है तो उन्हें न कह देना चाहिए। मुझे लगता है कि अगर वह एक खिलाड़ी के तौर पर खेलेंगे तो ज्यादा बेहतर होगा क्योंकि उनका प्रदर्शन नीचे आया है। उन्होंने कहा, भमुझे लगता है कि पंत की प्राथमिकता

आईपीएल में अच्छा करने और भारत की वनडे, टी20 टीम में वापसी करने की होगी। कप्तानी उनकी प्राथमिकता नहीं होगी क्योंकि वह इस समय भारत के उस लीडरशिप ग्रुप का हिस्सा नहीं है जो कप्तान बन सकें।



बल्लेबाजी पर देना होगा ध्यान
जाफर का मानना है कि पंत को अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान देना होगा।

उन्होंने कहा, भुझे लगता है कि उन्हें इस बात को अलग रख देना चाहिए और एक बल्लेबाज के तौर पर अच्छा प्रदर्शन करने पर ध्यान देना चाहिए, उन्हें अपनी फ्रेंचाइजी के लिए मैच जीतने पर ध्यान देना चाहिए। मुझे लगता है कि ऋषभ के लिए ये सही होगा। वहीं जाफर का मानना है कि दिल्ली की कप्तानी के लिए केएल राहुल सबसे सही

खिलाड़ी हैं।

राहुल भी लखनऊ से दिल्ली की टीम में आए हैं। वह भी लखनऊ की कप्तानी कर चुके हैं। इस समय वह भारत की टेस्ट टीम के उप-कप्तान हैं।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व विश्व चैंपियन मुक्केबाज जोलानी टेटे की हत्या

स्पोर्ट्स डेस्क। दक्षिण अफ्रीका के खेल मंत्री गयटन मैकेंजी ने बताया है कि पूर्व विश्व चैंपियन मुक्केबाज जोलानी टेटे की हत्या कर दी गई है। जानकारी के मुताबिक उन्हें घर में गोली मारी गई जिससे उनकी मौत हो गई। 38 वर्षीय टेटे पर यह हमला उस समय हुआ जब वे अपनी कार में सवार होकर घर पहुंचे थे और गेट खुलने का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान दो बदमाशों ने उन पर घात लगाकर हमला कर दिया।

शानदार रहा टेटे का करियर

पुलिस के अनुसार, यह घटना पूर्वी केप के मंडात्सेन में हुई। हमलावरों ने नकाब पहन रखे थे। इस हमले में टेटे की कार में मौजूद 27 साल की एक महिला को भी कई गोलियां लगीं, जिन्हें गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मालूम हो कि जोलानी टेटे ने अपने शानदार करियर के दौरान वर्ष 2007 से 2008 तक डब्ल्यूबीएफ फ्लाइवेट और 2017 व 2019 में डब्ल्यूबीओ बैथमवेट वर्ग में विश्व खिताब के बेल्ट अपने नाम किए थे।

दी नैक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक
बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन
ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा
हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर
गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी
गंगा टोला, निकट जानकी
बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर
पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित।
पिन:- 273003

UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार

मो. नं०. 7307180148, 9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोट:- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।

इंग्लैंड में पाकिस्तान शर्मसार!

हेडिंग्ले में 3 दिन
में ही टेस्ट मैच हारे,
दोनों पारियों में
200 रन भी नहीं बनाए



कोको गाफ सिनसिनाटी ओपन के सेमीफाइनल में

स्पोर्ट्स डेस्क। कोको गाॅफ ने 10वीं वरीयता प्राप्त मार्टा कोस्त्युक को 6-2, 6-2 से हराकर सिनसिनाटी ओपन के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। वह

ओपन एरा में 23 साल की उम्र से पहले कई सिनसिनाटी ओपन सेमीफाइनल में पहुंचने वाली चौथी खिलाड़ी भी बन गई हैं। कोको गाॅफ ने मार्टा कोस्त्युक को आसानी से हरा दिया। मुकाबले के दौरान गाॅफ का दबदबा देखने को मिला। उन्होंने अलग-अलग तरह के शॉट चुने और दूर पर किसी से भी बेहतर कोर्ट कवर किया।

बेजलेक ने कीज को हराया

जीत के बाद गाॅफ ने कहा, यह कमाल है, मुझे लगता है कि हम सब बहुत अच्छा कर रहे हैं। उम्मीद है, हम डबल

टाइटल जीत सकते हैं। ऐसा होने के लिए और मैच खेलने होंगे। हम पक्का एक-दूसरे का समर्थन करते हैं।

सेमीफाइनल में कोको गाॅफ का सामना



सारा बेजलेक से होगा। बेजलेक ने एक सेट से पिछड़ने के बाद और आखिर में तीसरे सेट के टाईब्रेक में 4-2 से पिछड़ने के बाद पूर्व ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन मैडिसन कीज को 3-6, 6-4, 7-6 (5) से हराकर सेमीफाइनल में पहुंची हैं।